चन्दामामा
नवम्बर १९९२
4
RS.

# भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स

# डायमण्ड कॉमिक्स

मध्यम वर्गीय क्लर्क की समस्याओं से जूझता
कार्टूनिस्ट प्राण का अनूठा चरित्र रमन
सैकड़ों ठहाकों से भरपूर रमन का नया कॉमिक्स

रमन का 25 वां सिल्वर जुबली अंक

रमन के अन्य कॉमिक्स

रमन और चमत्कारी तेल
रमन और चमन भाई
रमन और भगतजी
रमन की छतरी
रमन और कुम्भकरण की नींद
रमन और दस का नोट
रमन की कार
रमन की पैंट
रमन का ताऊ
रमन हिल स्टेशन पर
रमन और चौका छक्का
रमन और खलीफा की दाढ़ी
रमन का टेलीविजन
रमन—हम एक हैं
रमन सर्कस में
रमन और दस लाख की लाटरी
रमन का कूलर
रमन और पॉप म्यूज़िक
रमन और मसाला डोसा
रमन और रोलर्स स्केट
रमन और खलीफा का कुर्ता
रमन और खलीफा की शादी
रमन और रहस्यमय खजाना
रमन और लिफ्ट
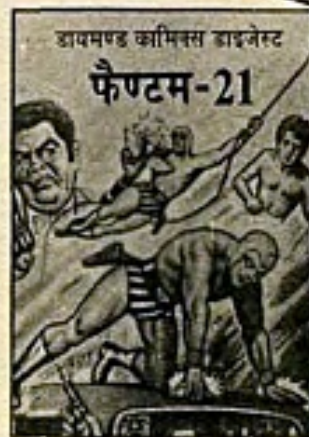
कार पोस्टर फ्री

डायमण्ड कामिक्स प्रा.लि., 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

# चन्दामामा

## नवम्बर १९९२

★

## अगले पृष्ठों पर



★


**एक प्रति : ४ रुपये**

**वार्षिक चन्दा : ४८ रुपये**

मैगी जिगसा पज़ल से मैगी के साहसिक कारनामों की दुनिया को जानो.

मैगी स्काई क्रूज़र में बादलों से आगे बढ़ो.

समुद्र से आकाश का अभियान पूरी करो मैगी एस एडवेंचरर्स गेम में

चोर को पकड़ो-मैगी हू-डन-इट रहस्यमय खेल में.

# अब मौज-मस्ती भरे साहसिक खेल!

## मैगी क्लब के सदस्यों के लिए मुफ़्त उपहार

मैगी रेडर्स ऑफ़ दि रेड स्टार गेम में ग्रहों पर विजय पाओ.

आओ बच्चो! मैगी क्लब में शामिल होकर मैगी के मौज-मस्ती भरी चमत्कारी दुनिया में रंग जमाओ!

बस यह लोगो मैगी नूडल्स के 5 रैपर के सामने वाले हिस्सों से काटकर हमें भेज दो. 6 से 8 हफ़्तों के बीच तुम्हें मैगी क्लब की ओर से तुम्हारी पसंद का मस्ती-भरा उपहार मिल जाएगा.

अपनी पसंद का उपहार मंगाते समय अपना नाम, पता और जन्म-तिथि ज़रूर लिख भेजना. और हां, अगर तुम पहले से ही मैगी क्लब के सदस्य हो तो अपनी सदस्यता संख्या अवश्य लिख भेजना. यदि तुम अभी तक सदस्य नहीं बने हो तो यह मौका मत चूकना! अपना विवरण भेजते समय सदस्यता कार्ड भी मंगवा लेना. तुम्हारे उपहार के साथ हम तुम्हारा मैगी क्लब सदस्यता कार्ड भी मुफ़्त भेज देंगे.

मुफ़्त मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमल्स' क्विज़ पुस्तिका!
अपने हर 2 उपहारों के साथ तुम मुफ़्त ले सकते हो मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमल्स' क्विज़ पुस्तिका.

हमारा पता है
मैगी क्लब
पो.ओ. बॉक्स 5788, नई दिल्ली-110 055

**एक और मौका:** अगर अभी तक तुमने मैगी 'बर्डहाउस' नहीं लिया है तो तुरन्त ले लो!

HTA 7778HIN

# वैमीकोल चमत्कारी गम
# ख़ूब चिपकाओ उसके संग

गुड़िया का एक सुन्दर सा घर बनाओ, फर्नीचर और दूसरी चीजों से सजाओ। मोटे-ताजे जानवर, मजेदार मुखौटे, और खिलौने। लकड़ी, कागज, कार्ड-बोर्ड, फैब्रिक... कुछ भी इस्तेमाल करो! मौज मस्ती की कोई सीमा नहीं। सोचते जाओ, बनाते जाओ, अपना खाली समय बेहतर ढंग से बिताओ।

**VAMICOL®**

आर्ट एण्ड क्राफ्ट एडहेसिव

वैम ऑरगेनिक
केमिकल्स लिमिटेड
स्काईलाइन हाउस, 85, नेहरु प्लेस, नई दिल्ली-110019

# चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

## बाल कल्याण की ओर नये कदम

१४ नवंबर समूचे राष्ट्र द्वारा बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है । इसी दिन भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का जन्म हुआ था । नेहरू जी का बच्चों के प्रति स्नेह और उनके कल्याण एवं भविष्य के लिए उनकी चिंता विश्व-प्रसिद्ध है । अनेक देशों ने, विशेषकर विकासशील देशों ने, इस आदर्श से प्रेरणा ली है ।

हाल ही में कोलंबो में बच्चों के बारे में एक मंत्री-स्तर का सम्मेलन हुआ । इसका आयोजन सार्क, यानी प्रादेशिक सहयोग के लिए सात राष्ट्रों के दक्षिण एशियाई संघ, ने किया । इस संघ का भारत भी सदस्य है । मेज़बान देश श्रीलंका ने बचों के लिए एक मांग पत्र तैयार किया जिस पर सम्मेलन ने विचार किया । इस पत्र में १८ वर्ष से कम आयु का व्यक्ति "बालक" कहा गया है । हर बालक का अधिकार है कि उसके प्रति नस्ल, लिंग, धर्म या सामाजिक उद्गम के आधार पर अंतर किये बिना हर प्रकार के भेदभाव और दंड से सुरक्षा प्रदान की जाये । इसके लिए उसकी सामाजिक स्थिति, क्रिया-कलाप तथा उसके माता-पिता के अभिमत को भी ध्यान में रखा जायेगा । पत्र बालक की शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के माध्यम से उसके जीवन, अतिजीविता तथा विकास के मूलभूत अधिकार को भी मान्यता देता है । सम्मेलन ने बड़ों से अनरोध किया है कि वे बालकों को भूख, बीमारी, बेघर होने तथा हिंसा से बचाने की चनौती का सामना करने के लिए एकजुट हो जायें । खास बात तो यह है कि १९८६ में बंगलौर में हुए सार्क सम्मेलन में पहली बार बालकों के प्रति विश्व का ध्यान खींचने का निर्णय लिया गया था । परिणाम स्वरूप १९८९ में बालक के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्रसंघ का एक समझौता हुआ और उसके परिणाम स्वरूप १९९० में बालकों पर एक विश्वशिखर सम्मेलन हुआ ।

जून में रियो-डी-जेनेरो में हुए १७० राष्ट्रों के भू-शिखर सम्मेलन के विशेष अधिवेशन में बालकों के प्रति कुपोषण के कारण उत्पन्न पर्यावरणीय संकट, रोग तथा असमय मृत्यु पर विशेष ध्यान दिया गया है और उनके जीवन के साथ होने वाली हिंसा को खत्म करने के लिए आह्वान किया गया है ।

वर्ष : ४५ नवंबर १९९२ अंक : ३

एक प्रति : रु. ४/- वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

आओ जश्न मनाएं, गीत कैम्पको के गाएं!

"यह दूधभरी, यह क्रीमभरी, यह स्वादभरे सपनों से भरी.
यह मेरी मनभाती चॉकलेट. कैम्पको क्रीमी मिल्क चॉकलेट।"

# पश्चिम एशिया में शांति की ओर नये कदम

जब से इज़राएल में लेबर पार्टी सत्ता में आयी है, तब से पश्चिम एशिया को परेशान करने वाले मसलों के सुलझने की ज्यादा उम्मीद दिखाई देने लगी है। इससे पहले वहां १५ वर्षों तक लिकुड पार्टी निर्बाध रूप से सत्ता संभाले रही।

पिछले जून के महीने में १२० सदस्यों वाली इज़राएल की संसद, नैसेट के चुनाव हुए। लेबर पार्टी को ४७ स्थान मिले जबकि सत्ताधारी लिकुड दल को केवल ३३ स्थान ही मिल पाये। मेरट्ज़ दल ने १२ स्थान लिये और इस की सहायता से लेबर पार्टी ने कार्यकारी बहुमत प्राप्त करके सरकार बनायीं। दो अरब दलों को ५-५ स्थान मिले। उन्होंने भी लेबर दल को सहयोग देने का आश्वासन दिया।

इस प्रकार लेबर नेता यित्ज़ाक राबिन इज़राएल के नये "रोश मेम शा-लाह", यानी प्रधानमंत्री, बन गये। इसके साथ ही लिकुड पार्टी के यित्सॉक शमीर का १५ वर्षीय शासन खत्म हो गया। इस दौरान बेचारे फिलिस्तीनियों के साथ क्या-क्या जुल्म नहीं हुए। लिकुड पार्टी के अंतहीन शासन का खत्म हो जाना इज़राएलियों और फिलिस्तीनियों, दोनों की निगाह में शांति का द्योतक है।

श्री राबिन का जन्म यरूशलम में आज से ७० वर्ष पूर्व हुआ था। उनके माता-पिता पूर्वी योरप से निकलकर फिलिस्तीन में आ बसे थे। इस दृष्टि से वह केवल एक-मात्र असली "साबरा" (वह व्यक्ति जिसका जन्म आज के इज़राएल में हुआ हो) हैं। इनसे पहले इज़राएल का कोई भी प्रधान मंत्री इस प्रतिष्ठा का हकदार नहीं था। यह एक ऐसा गुण है जो उनके पक्ष में रहा। एक कृषि विद्यालय में शिक्षा पाने के बाद युवा राबिन 'पालमाश' में शामिल हो गये। पालमाश भूगर्भ यहूदियों के लड़ाकू संगठनों में से एक है।

जब इज़राएल स्वतंत्र हुआ तो श्री राबिन वहां की सशस्त्र सेना में भरती हो गये और होते-होते उसके सर्वोच्च पद पर पहुंच गये। १९६८ में वह अमरीका में राजदूत के नाते गये। पांच वर्ष बाद वह इज़राएल की राष्ट्रीय राजनीतिक धारा में लौट आये, और १९७४ से १९७७ तक प्रधान मंत्री रहे। तब भी

वह लेबर पार्टी के ही नेता थे । जब लिकुड और लेबर दलों की मिली-जुली सरकार बनी, तो वह १९८४ से १९९० तक रक्षा मंत्री के पद सर रहे । दरअसल, १९९० में दोनों दलों के बीच सत्ता-बंटवारे की व्यवस्था खत्म हो गयी थी । उस समय श्री शिमोन पेरेज़ प्रधान मंत्री थे । श्री राबिन ने इन्हें इस वर्ष फरवरी में हुए दल के चुनाव में पराजित किया, और वहां के छाया प्रधानमंत्री बन गये ।

नये शासन का अविर्भाव पश्चिम एशिया में स्थायी शांति की ओर अधिक उन्मुख समझा जाता है, क्योंकि जो फिलिस्तीनी अपनी मातृभूमि से विस्थापित हो चुके हैं, उनके प्रति यह न्याय करना चाहता है । इस दिशा में संकेत स्वयं श्री राबिन से आया जब उन्होंने रेडियो और टी. वी. पर अपने एक भाषण में वादा किया कि राष्ट्र की प्राथमिकताएं बदल कर सामाजिक आवश्यकता पर ज़्यादा ध्यान दिया जायेगा । यह तभी संभव है जब इज़राएल के कब्ज़े में आये क्षेत्रों में यहूदी बस्तियों पर कम खर्च किया जाये । इसका अर्थ यह भी है कि इन क्षेत्रों पर इज़राएल का शिकंजा ढीला हो ।

श्री राबिन ने अरब नेताओं को बातचीत के लिए आमंत्रित करके अच्छी शुरुआत की है । इन नेताओं में जोर्डन के बादशाह तथा लेबनान और सीरिया के राष्ट्रपति शामिल हैं । इस पेशकश के बाद उन्होंने इज़राएल के कब्ज़े वाले सभी क्षेत्रों में निर्माण-कार्य पर रोक लगा दी । फिर वह मिस्र के राष्ट्रपति हुसनी मुबारक से भेंट करने के लिए स्वयं ही काहिरा जा पहुंचे । श्री हुसनी मुबारक ने उनसे पहले प्रधानमंत्री, शमीर, से भेंट करने से इनकार कर दिया क्योंकि वह उन्हें अरब इज़राएल वार्तालाप के प्रति "अप्रतिबद्ध" मानते थे । दोनों नेता इस बात पर सहमत हो गये कि यही वह समय है जब पश्चिम एशिया में शांति की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है । इधर फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन ने यह मांग की है कि इज़राएल के कब्ज़े वाले क्षेत्रों में बस्तियां खड़ी करने का काम तो रुकना ही चाहिए, साथ में इज़राएल को पश्चिमी तट और गाज़ा पट्टी से भी हट जाना चाहिए क्योंकि आज से लगभग ५० वर्ष पहले फिलिस्तीनियों को वहां से बाहर कर दिया गया था । साथ ही फिलिस्तीनी मुक्ति मोर्चा के नेता यासर अराफात ने प्रधान मंत्री राबिन से मिलने की अपनी इच्छा व्यक्त की है ।

पश्चिम एशिया शांति वार्ता का अगला दौर वाशिंगटन में होना तय हुआ है । तब वार्ता में भाग ले रहे देश और दल इस बात का बड़ी उत्सुकता से इंतज़ार करेंगे कि शांति की दिशा में इज़राएल की नयी पेशकश क्या रहती है ।

# प्रेतनी से छुटकारा

शिवशंकर का जन्म एक छोटे से गांव, रजनीगंधा, में हुआ था। अपनी पढ़ाई-लिखाई पूरी करके वह शहर चला गया जहां उसे सरकारी नौकरी मिल गयी। उसका विवाह कात्यायनी के साथ हुआ। कात्यायनी पास के एक छोटे-से गांव में पलकर बड़ी हुई थी।

घर मिलते ही शिवशंकर ने अपनी पत्नी को शहर बुला लिया।पत्नी जानती थी कि नया घर बसाना है। इसलिए वह अपने साथ ढेर सारा सामान लेती आयी। शिवशंकर ने उससे कहा कि वह सारा सामान करीने से व्यवस्थित कर ले और शाम को बढ़िया कपड़े पहनकर तैयार हो जाये, क्योंकि उन्हें एक मित्र के यहां भोजन पर जाना है।

शिवशंकर का यह घर तीन कमरों का था। कात्यायनी ने पहले कमरे में कुर्सियां डलवा दीं, और खिड़कियों पर परदे टांग दिये। दूसरे कमरे में उसने पलंग और एक शीशे वाली मेज़ लगवा दी। तीसरे कमरे में उसने रसोई का सारा सामान रखा।

जब तक घर को तरतीब देने का काम खत्म हुआ, तब तक शाम हो चुकी थी। नहाकर उसने एक साफ-सुथरी साड़ी पहनी और एक कुर्सी पर बैठकर चमेली के फूलों की माला गूंथने लगी।

अभी वह माला गूंथ ही रही थी कि खिड़की की राह से कूदकर एक बंदर उस कमरे में चला आया। एक प्रेतनी में वह तब्दील हो गया तो। कात्यायनी चीख उठी।

"डरती क्यों हो? मैं कोई राक्षसी तो नहीं हूं!" प्रेतनी बड़े शांत स्वर में बोली, "पच्चीस साल पहले मैंने यह घर अपने सारे ज़ेवर बेचकर खरीदा था। लेकिन मेरे पति ने शराब और जुए की लत में ढेर सारे कर्ज़ उठा लिये, और उन्हें चुकाने के लिए उसे

इस घर को बेचना पड़ा । यह घर मेरा है । सारे काम यहां मेरी इच्छा के अनुसार होंगे ।" और यह कहकर वह एक कुर्सी पर बैठी ।

कात्यायनी अब भी मारे डर के वहीं की वहीं खड़ी थी । तब प्रेतनी ने उसे डांटते हुए कहा, "बुत बनी क्यों ख़डी हो? घर आये मेहमान का सत्कार करना नहीं जानती? जाओ, मेरे लिए कुछ नाश्ता लेकर आओ ।"

कात्यायनी कांपते हुए रासोईघर में गयी और मायके से लायी हुई खाने की चीज़ों के साथ लौट आयी ।

प्रेतनी वे सारी चीजें खा गयी और फिर घर के भीतर अच्छी तरह से नज़र घुमा कर देखते हुए बोली, "उफ! यह घर है कि श्मशान! क्या तुम्हें ठीक से चीज़ें रखनी नहीं आती? मैं जैसे कहती हूं, वैसे करो ।"

अब उसने पहले कमरे में रसोई के बर्तन और अंगीठी रखवायी । दूसरे कमरे में उसने कुर्सियां डालने को कहा और तीसरे कमरे में पलंग ।

कात्यायनी ने जब उसे रोकने की कोशिश की तो प्रेतनी ने उसे डांट दिया और बोली, "यह मत समझना कि मैं जैसी दिखाई देती हूं, वैसी ही हूं । मेरी बात अगर तुमने नहीं मानी तो तुम्हारी खैर नहीं । समझी ।"

कात्यायनी मारे डर के कुछ न कह सकी । जैसे प्रेतनी ने कहा था, वैसे ही उसने सामान की अदला-बदला कर दी । इतने में बाहर से शिवशंकर के आने की आहट हुई । प्रेतनी उसे सावधान करते हुए बोली, "मेरे बारे में अपने पति से कुछ न कहना, वरना मुझ से बुरा कोई न होगा ।" फिर वह बंदर के रूप में खिड़की से कूद कर यह जा, वह जा ।

शिवशंकर जैसे ही घर में घुसा, वह घर में रखे सामान को देखकर चौंक उठा और गुस्से से बोला, "क्या सामान रखने का यह ढंग है तुम्हारा?" फिर वह सारे सामान को नये ढंग से रखने में जुट गया । तब तक रात काफी हो चुकी थी । उसे लगा कि इतनी रात गये दोस्त के घर जाना ठीक नहीं होगा । इसलिए वह घर में बची चीज़ें खाकर ही सो गया ।

कात्यायनी अपने पति से प्रेतनी के बारे

में मारे डर के कुछ कह न सकी ।

दूसरे दिन काम पर जाते हुए शिवशंकर ने कात्यायनी से कहा, "देखो, आज मैं दोपहर के वक्त खाना खाने आऊंगा ।"

कात्यायनी खाना बनाने जा ही रही थी कि इतने में खिड़की से प्रेतनी आ गयी और फिर कात्यायनी की बगल में आ बैठी । फिर उसने उससे दाल में चीनी और चटनी में तीन चार गुना ज़्यादा नमक और मिर्च डलवा दिये और बैंगन के टुकड़ों को तलने भी नहीं दिया, बल्कि उनमें नमक-मिर्च लगवाकर वैसे ही रखवा दिया । अपने लिए उसने उससे बढ़िया खाना बनवाया और उसे खाकर शिवशंकर के आने से पहले खिड़की की राह बाहर हो गयी ।

शिवशंकर बढ़िया खाना खाने की उम्मीद से जब घर आया तो कात्यायनी को कुछ नहीं सूझा । उसने डरते हुए वही खाना, जो प्रेतनी ने उससे बनवाया था, उसके सामने परोस दिया । शिवशंकर ने जैसे ही उसे अपने मुंह में रखा, वैसे ही वह थू-थू करने लगा और गुस्से में भरकर बोला, "यह भी कोई खाना है, तुम्हें क्या हो गया है! सच, मुझसे बहुत गलती हुई । तुम बीवी बनने के लायक नहीं थी ।" फिर उसने खाने से भरी थाली उठायी और उसे परे फेंक दिया, और साथ ही वह घर से बाहर चला गया ।

प्रेतनी बराबर उसे परेशान करने पर तुली हुई थी । उसके डर के मारे कात्यायनी मुंह भी खोल न सकती थी । उसका पति रोज़ उसे खूब डांटता ।

जब प्रेतनी की हरकतें वह सह नहीं पायी

कात्यायनी नहीं चाहती थी कि प्रेतनी वाली बात अपने मां-बाप को बताकर उन्हें दुखी करे। इसलिए उन्हें भी उसने वह बात नहीं बतायी। लेकिन शाम को जब उसका बड़ा भाई, हनुमान प्रसाद, लौटा तो उसे उसने सब कुछ विस्तार से बता दिया।

हनुमान प्रसाद काफी समझदार था। उसने कहा, "बहन, तुम चिंता मत करो। एक हफ़्ते में ही मैं उस प्रेतनी से तुम्हारा पीछा छुड़वा दूंगा। बस, सब्र से काम लो।"

अगले दिन हनुमान प्रसाद दोपहर बाद अपने बहनोई के दफ्तर में जा पहुंचा। उसे देखकर शिवशंकर एकदम झुंझला गया और बोला, "क्यों जी,, यहां कैसे आये? क्या यह देखने आये हो कि तुम्हारी मूर्ख बहन के चले जाने के बाद मैं किस हाल में हूं? तुम्हें रहम करने की कोई ज़रूरत नहीं।"

हनुमान प्रसाद ने बड़े शांत भाव से शिवशंकर की पीठ पर अपना हाथ रखा और उसे प्रेतनी के बारे में सब कुछ बताने के बाद बोला, "उस प्रेतनी को तो ठिकाने लगाना ही होगा। उसे मैं काफी दूर तक भगा दूंगा। बस, मुझे तुम्हारा ही थोड़ा-सा सहयोग चाहिए। तुम वही करो जो मैं कहता हूं।" और फिर उसने उसे समझा दिया कि उसे क्या करना होगा, और वहां से वह सीधा अपने गांव लौट आया। जब सुबह हुई तो उसने अपनी बहन कात्यायनी को भी समझा दिया कि उसे क्या करना होगा। उसने उसे तुरंत शहर भेज दिया।

तो एक रात उसे मजबूर होकर अपने पति से कहना पड़ा, "मैं कुछ दिन के लिए मायके जाना चाहती हूं।"

कात्यायनी ने जैसे ही मायके जाने का ज़िक्र किया, शिवशंकर ने फौरन "हां" कर दी और बोला, "जाओ, जाओ। जब तक तुम्हारा मन करे, वहां रहो। तब तक मुझे कुछ शांति मिली रहेगी।"

इन चंद ही दिनों में कात्यायनी की हालत काफी खराब हो गयी थी। वह देखने में बीमार-सी लगती थी। उसे देखकर उसकी मां की आंखों में आंसू आ गये, बोली, "बेटी, यह तुम्हारा क्या हाल हो गया है। क्या तुम्हें पति के घर में सुख नहीं मिला? सच-सच सब बात बताओ।"

शहर पहुंचकर कात्ययनी ने जैसे ही अपने घर में कदम रखा, वह प्रेतनी बंदर के रूप में किचकिचाते हुए कमरे में घुस आयी और फिर प्रेतनी का रूप धारण करके ज़ोर से अट्टहास करते हुए बोली, "मुझे लगा कि शायद तुम मायके में ही रह जाओगी। पर अच्छा हुआ जो तुम जल्दी ही लौट आयी। तुम्हारा पति दोपहर के भोजन के लिए आयेगा न। लेकिन पहले तुम मेरे लिए भोजन तैयार करो। मुझे बड़े जोरों की भूख लगी है। फिर तुम अपने पति के लिए करना। हां, जैसा मैं कहती हूं तुम्हें वैसा ही करना होगा।" और यह कहकर प्रेतनी जल्दी मचाने लगी।

दोपहर को जब शिवशंकर घर पर खाना खाने आया और पत्नी ने जब उसके सामने खाना परोसा तो वह उसे बड़े चाव से खाते हुए बोला, "वाह, क्या बात है! इतना बढ़िया खाना! भई, मज़ा आ गया।" और यह कहते हुए वह किसी तरह उस खाने को खा गया, हालांकि बीच में उसे उलटी होने को हुई।

फिर शाम को जब शिवशंकर घर लौटा और उसने स्नान करने की इच्छा प्रकट की तो कात्यायनी ने उसे प्रेतनी के कहे अनुसार ठंडा पानी दिया। इस पर भी शिवशंकर बहुत खुश होते हुए बोला, "ठंडे पानी का भी अपना ही आनंद है। स्वास्थ्य के लिए तो यह बहुत ही लाभदायक है। चिकित्सक लोग भी तो यही कहते हैं। अब तो मैं हमेशा ठंडे पानी से ही नहाया करूंगा।" और यह कहते हुए शिवशंकर कोई धुन गुनगुनाता हुआ नहाता रहा।

रात को कात्यायनी ने चादर की जगह पलंग पर कंबल बिछा दी। उसे देखकर शिवशंकर ने कहा, "तुमने बिलकुल ठीक किया। इस मौसम में भला चादर की क्या ज़रूरत है। शरीर को ज़्यादा आराम देना ठीक नहीं। मुझे तो कंबल पर सोना बहुत अच्छा लगता है।" और यह कहते उसने अपनी पत्नी की प्रशंसा के पुल बांध दिये।

प्रेतनी यह सब देख रही थी। मारे गुस्से के उसका पारा चढ़ता जा रहा था। लेकिन वह कुछ बोल नहीं पा रही थी।

अगले दिन वह दुखी होकर कात्यायनी से बोली, "अजब बात है! तुम्हारा पति तो

बिलकुल जोरू का गुलाम हो गया है । बीवी कुछ भी उलटा सीधा करे, वह बस, तारीफ ही किये जाता है । धत् तेरे की! यह कैसा आदमी है जो अपनी पत्नी से एक बार भी ऊंचा नहीं बोलता!" प्रेतनी शिवशंकर की आलोचना किये जा रही थी ।

जैसे कि पहले तय हो चुका था, कात्यायनी का बड़ा भाई, हनुमान प्रसाद, अगले दिन सुबह-सुबह ही कात्यायनी के यहां आ पहुंचा । उसे देखते ही शिवशंकर ने ऊंची आवाज़ में कात्ययनी को पुकार, "कहां हो, भई! देखो, तुम्हारे भैया आये हैं!

प्रेतनी उस दिन सुबह-सुबह ही कौए का रूप धारण करके घर की अटारी पर आ बैठी थी, और घर में होने वाली हर गतिविधि पर आंख रखे हुए थी ।

पति की आवाज़ सुनकर कात्यायनी उतने ही ज़ोर से बोली, "मैं यहां काम में लगी हूं । भैया, बिना कोई सूचना दिये इस तरह अचनाक कैसे आ गये?" कात्यायनी के इस प्रश्न का उत्तर हनुमान प्रसाद ने अपनी आवाज़ ऊंची करके स्वयं ही दिया, "खास बात कुछ नहीं, बहना । पिछले दिनों चौधरी जी की छोटी बहू को एक प्रेत बहुत सता रहा था । उसे मैंने पकड़कर एक शीशी में बंद कर दिया है । शीशी में जाते हुए उस प्रेत ने आंसू ढुलकाते हुए कहा कि मैं उसके लिए एक प्रेतनी को भी कहीं से पकड़ कर लाऊं और इस शीशी में बंद कर दूं । मुझे उस पर बहुत तरस आया । इसलिए अब मैं एक प्रेतनी की खोज में आया हूं ।"

प्रेतनी ने जब यह सब सुना तो वह बुरी तरह से कांप गयी और ज़ोर-ज़ोर से कांव-कांव करते हुए अटारी से उड़कर बड़ी फुर्ती से कहीं ग़ायब हो गयी ।

शिवशंकर, कात्यायनी और उसका भाई हनुमान प्रसाद, सब समझ गये कि वह कौआ, प्रेतनी ही था ।

शिवशंकर ने हनुमान प्रसाद का हाथ थाम लिया और कहने लगा, "मुझे क्षमा कर देना, भाई । मुझे असलियत का पता नहीं था । मैंने नाहक तुम्हारी बहन को इतना कष्ट पहुंचाया ।"
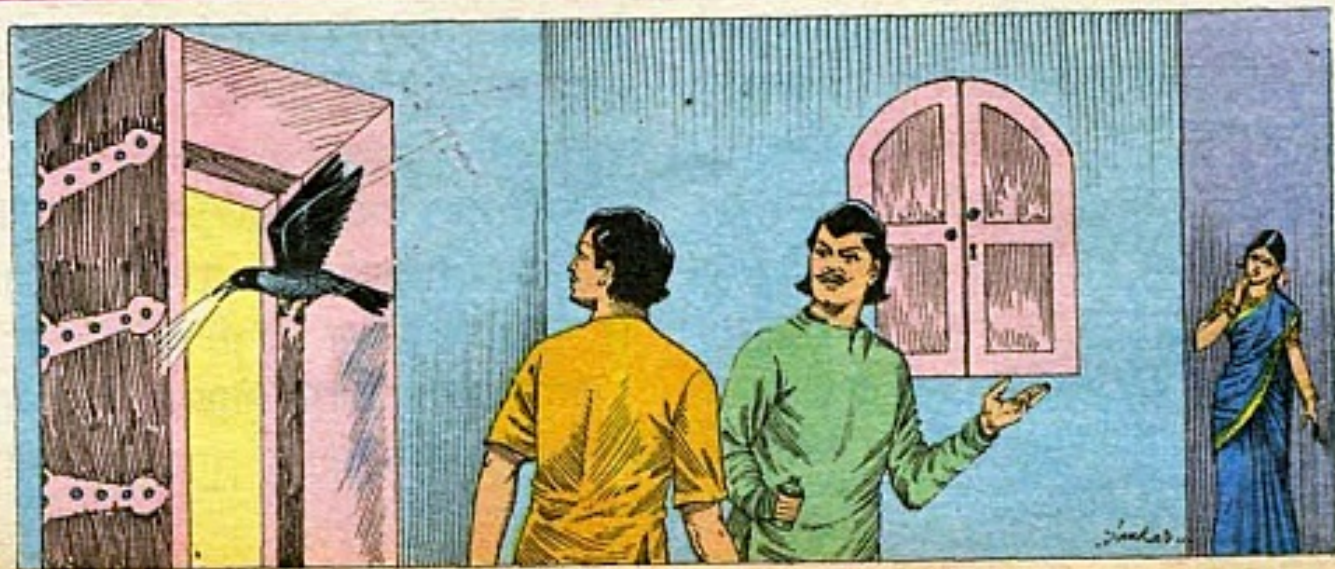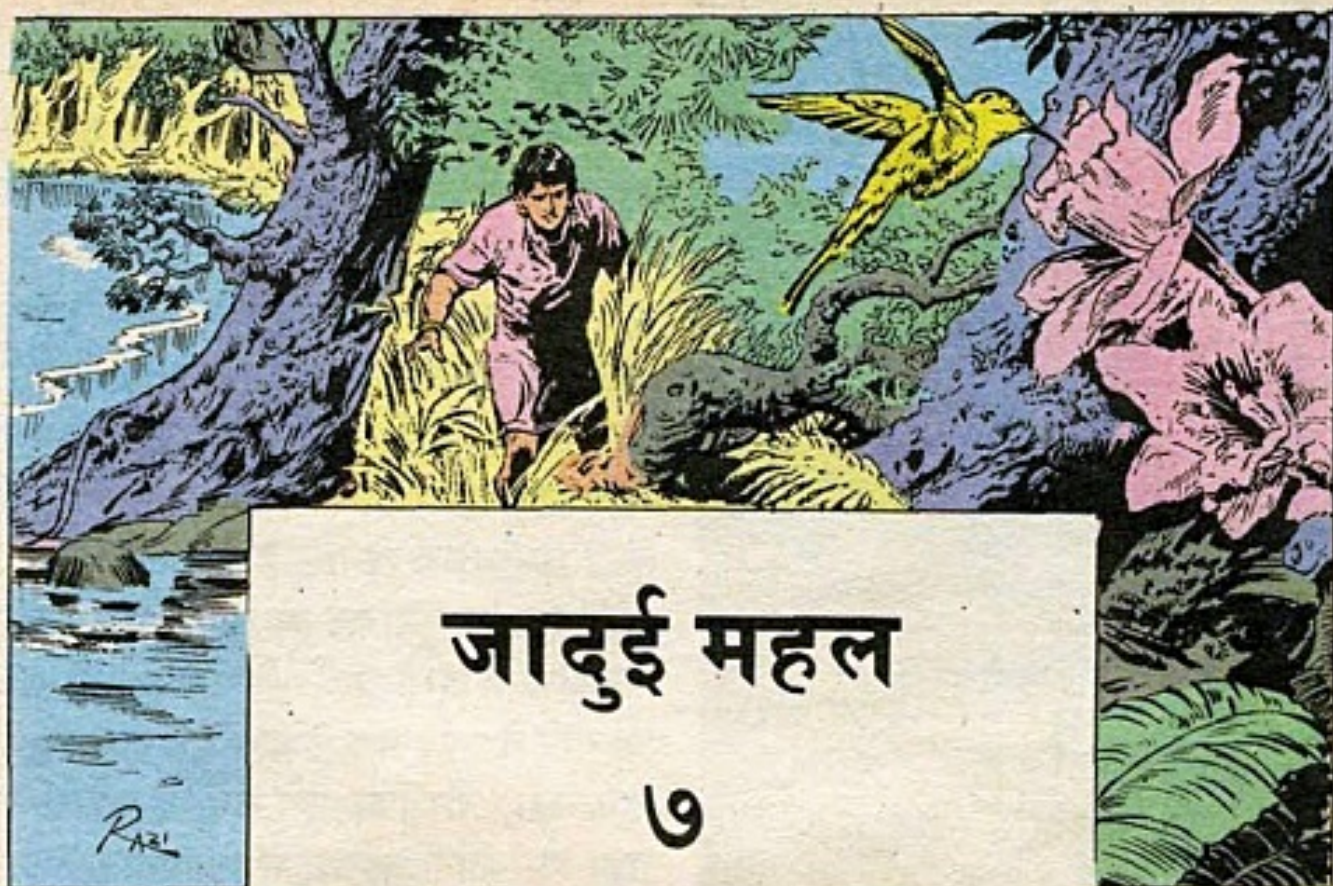
# जादुई महल

## ७

[लापता राजकुमारी की खोज में निकला महेंद्रनाथ पहले झील वाले उस महल को देखता है जहां से विद्यावती गायब हुई थी, और फिर अपनी खोज पर निकल पड़ता है । राजा के नाविक से महेंद्रनाथ बता देता है कि वह किस काम से निकला है । नाविक उसकी सफलता की कामना करता है । —उस से आगे ]

नाविक से विदा लेकर महेंद्रनाथ झील के किनारे-किनारे आगे बढ़ा । वहां कोई नियमित पगडंडी तो नहीं थी । इस लिए आगे बढ़ने के लिए उसे कई बार झाड़ियां साफ करके अपना रास्ता बनाना पड़ा । वह झील के साथ-साथ ही चलता रहा । उसकी उत्सुकता उस समय एकाएक जगी, जब उसने देखा कि एक चट्टान के किनारे को काटकर कुछ सीढ़ियां तराशी गयी हैं, और वे सीढ़ियां पानी में ही उतरती हैं । फिर उसने ज़रा और गौर से देखा और पाया कि जंगल में आसानी से प्रवेश को रोकने के लिए पेड़ों की अनेक शाखाओं को एक दूसरे के ऊपर ऐसे ही पटक दिया गया है ।

उसने कुछ समय लगाकर उन शाखाओं को वहां से हटाया । शाखाएं हटाने पर उसे वहां खुली जगह दिखाई दी । वहां से एक ऊबड़-खाबड़ रास्ता दूर तक निकल जाता था । उसे पता चला था कि वह जगह हाल ही में इस्तेमाल में आयी है । उसने बड़ी

संन्यासी था ।

"ऐसा कुछ नहीं, प्रभू ।" महेंद्रनाथ ने कहा, "मैं ऐसे ही इस जंगल में भटकता हुआ पहुंच गया हूं ।"

वह संन्यासी छरहरे बदन का था, लेकिन ठाठदार दिखता था । महेंद्रनाथ उसकी करुणा से भरी आंखों और उसके शांत मुखमंडल को देखकर अभिभूत हो गया ।

"अब अंधेरा हो गया है । मैं तुम्हें सलाह नहीं दूंगा कि तुम रात को अपनी यात्रा जारी रखो, चाहे तुम्हें कहीं भी पहुंचना हो ।" संन्यसी ने महेंद्रनाथ के कंधों पर हाथ रखते हुए कहा, और फिर उसे, जैसे कि सहारा दे रहा हो, अपनी कुटिया में ले गया । "तुम रात यहीं मेरे पास रुको ।"

साधु और महेंद्रनाथ ने कुटिया में प्रवेश किया । संन्यासी बोला, "मैं कई वर्षों तक समूचे देश में घूमता रहा और फिर एकांत और शांति की खोज में यहां चला आया । यहां पहुंचकर मेरा और कहीं जाने को मन नहीं हुआ । पता नहीं कि कितने वर्ष हो गये । लेकिन तुम पहले व्यक्ति हो जो मैं ने यहां देखा हो ।"

महेंद्रनाथ कुछ समय तक चुप रहा । फिर वह संन्यसी की टांगें दबाने लगा । साथ-साथ उसने बोलना भी जारी रखा ।

"भगवन, मेरा नाम महेंद्रनाथ है," युवा महेंद्रनाथ ने बताना शुरू किया । "मैं वीरगिरि का रहने वाला हूं । वहां मेरी मां फूल चुनती है और मंदिर के लिए हार तैयार

सावधानी से उस रास्ते पर संभलकर चलना शुरू किया ।

महेंद्रनाथ अब पूरी तरह से चौकन्ना था । वह बड़े धीमे कदमों से चल रहा था । सूरज अभी ऊपर आकाश में ही था, लंबे-लंबे पेड़ों के कारण उसकी रोशनी रास्ते पर नहीं पड़ रही थी ।

लेकिन महेंद्रनाथ के आश्चर्य का तब कोई ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि उसके सामने कोई बहुत खाली जगह है और उसके एक किनारे पर कुटिया है । वह कुटिया की ओर बढ़ा । उसने चारों तरफ घूमकर देखा । उसे कोई दिखाई नहीं दिया । इतने में उसे एक आवाज़ सुनाई दी, "वत्स, तुम्हें किस की तलाश है?" कहने वाला एक

करती है। मैं अभी बहुत छोटा था जब मेरे पिताजी चल बसे। मेरी परवरिश मेरे चाचा और चाची ने की। चाची का देहांत अचानक एक बच्चे को जन्म देते समय हो गया। चाचा ने इस दुनिया के सभी मोह त्याग दिये और एक दिन एकाएक लापता हो गया। तब से हमें उसका कोई पता नहीं चला।"

संन्यासी ने एकदम अपनी टांगें खींच लीं और वह बिस्तर पर बैठ गया।

महेंद्रनाथ ने अपनी बात जारी रखी और बोला, "राजकुमारी विद्यावती का अपहरण हुआ। राजा के सैनिक चारों दिशाओं में फैले हुए हैं। लेकिन उन्हें भी उसके बारे में कोई खबर नहीं मिली। मैंने सोचा कि जहां सैनिक नहीं पहुंच पाये हैं, शायद मैं पहुंच पाऊं। यदि मैं सफल हो जाता हूं तो हो सकता है राजा खुश होकर मुझे किसी काम पर लगा लें। राजकुमारी सारस सरोवर से ग़ायब हुई है। मैंने इसी लिए झील के आस-पास के जंगल को इस खोज के लिए चुना, यहां आ पहुंचा।"

"लेकिन बेटे, इन जंगलों में तो कोई नहीं रहता, और यह धवलगिरि पर्वत एक तरफ से तो बिलकुल दुर्गम है।" संन्यासी ने उसे चेताते हुए कहा। "पर्वत के दूसरी तरफ हिमगिरि राज्य है। जंगल में से होकर कोई वहां पहुंच नहीं सकता।"

"प्रभु। मैं जवान हूं, काफी दम रखता हूं। मेरा ख्याल है मैं किसी भी खतरे का जोखिम उठा सकता हूं।"
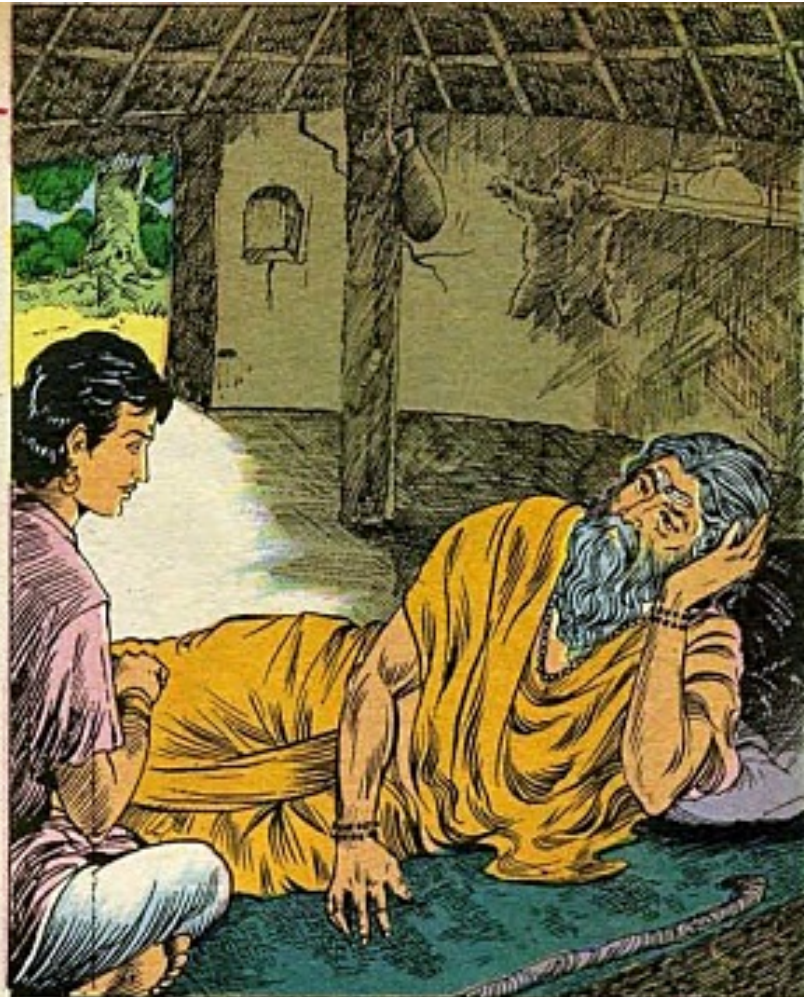
"ठीक है, बेटे, मैं तुम्हारी भावनाएं समझता हूं" संन्यासी ने उत्तर दिया। "तुम्हें कुछ आराम की अब ज़रूरत है। कल से तुम्हें अगली यात्रा शुरू करनी है।"

सुबह जब महेंद्रनाथ जगा तो उसने देखा कि संन्यासी गहरी समाधि में है। वह अपनी यात्रा के लिए तैयार हो गया और फिर संन्यासी के समाधि से बाहर आने की प्रतीक्षा करने लगा। और जैसे ही संन्यसी की समाधि टूटी, वह उसके सामने दंडवत् हो गया।

संन्यासी ने उसे आशीर्वाद देते हुए कहा, "तुम्हारा निर्णय अटल है। मैं तुम्हारी सफलता की कामना करता हूं। यह अंगूठी तुम अपने पास रख लो। मैंने इसे तुम्हारे

लिए अभिमंत्रित किया है। यह तुम्हें हर बाधा पार करने में सहायता देगी। इसका पता तुम्हें अपने आप चल जायेगा। मैं तुम्हें भी सतर्क कर रहा हूं-तुम इसके बारे में किसी से बात नहीं करोगे, तभी इसकी शक्ति बनी रहेगी। मैं यही चाहूंगा कि तुम अपनी मां के पास लौटने से पहले इधर से ही होकर जाओ। वह बेचारी, तुम नहीं जानते, तुम्हारे सुरक्षित लौटने का किस बेसब्री से इंतज़ार कर रही होगी।"

"भगवन्, मैंने उसके बारे में आपको बताया नहीं," महेंद्रनाथ ने बात साफ करने की कोशिश की। "हमारे राजा बहुत ही महान हैं। उन्होंने, जब तक मैं बाहर हूं, उसकी देखरेख की पूरी व्यवस्थ की है। यह व्यवस्था महल से ही होती रहेगी। मुझे मां को लेकर कोई चिंता नहीं है। मैं निश्चिंत होकर अपना काम जारी रख सकता हूं। आपने मुझे जो अंगूठी दी है, मैं उसके लिए आपका बहुत आभारी हूं, और मैं आपको वचन देता हूं कि जैसे ही मेरा यह काम पूरा होगा, मैं अपाके दर्शनार्थ यहां ज़रूर आऊंगा।"

संन्यासी ने महेंद्रनाथ को बड़े स्नेह से अपने गले लगा लिया। महेंद्रनाथ ने देखा कि संन्यासी की आंखें भर आयी हैं। उसे ताज्जुब हो रहा था कि कैसे कोई व्यक्ति, जिसने सांसारिक सुख-दुःख छोड़ दिये हों, इस तरह से विह्वल हो सकता है?

वह संन्यासी की कुटिया के अहाते से बाहर आ गया था। वह कुछ देर तक अब यही सोचता रहा कि वह किस दिशा में जाये। उसे फिर सेनापति की बात याद आयी। उसने कहा था कि बेहतर यही होगा कि पश्चिम में पहुंचने के लिए दक्षिण से होकर जाया जाये। इसलिए उसने उसी दिशा में चलना शुरू किया।

उसने आज वह रास्ता नहीं अपनाया था जिस पर वह पिछले दिन चलकर आया था। लेकिन उसे लगा कि उसका रास्ता उतना मुश्किल नहीं है जितना कि वह उसके बारे में सोचकर डर रहा था। वह जल्दी ही पर्वतीय क्षेत्र में पहुँच गया। जैसे-जैसे वह पर्वत पर चढ़ता गया, उसने देखा कि पेड़ों की संख्या बहुत कम हो रही है, और वे उतने लंबे भी नहीं हैं।

पर चढ़ाई काफी कठिन थी । महेंद्रनाथ को बार-बार रुकना पड़ रहा था । लेकिन इससे उसे अपने चारों ओर का सर्वेक्षण करने के लिए भी समय मिल गया और जब उसका ध्यान नीचे की ओर गया तो उसे पेड़ों की चोटियों के अलावा और कुछ दिखाई नहीं दिया । वैसे भी ढलान के पेड़ उसकी दृष्टि को बहुत दूर तक जाने नहीं दे रहे थे । लेकिन एक बात तो निश्चत थी कि जिस पहाड़ पर वह चढ़ रहा था,वह काफी ऊंचा था ।

सूरज ढलते-ढलते वह पहाड़ की चोटी तक पहुंच ही गया । उसकी आंखों के सामने अब किसी भवन की ऊंची-ऊंची दीवारें थीं । लेकिन जहां वह खड़ा था, वहां से सब कुछ साफ-साफ दिखाई नहीं दे रहा था । शाम के इस धुंधलके में उस भवन के बारे में पूरा अनुमान लगा पाना उसके लिए मुश्किल हो रहा था । उसे, बस यही आभास मिल रहा था कि यह भवन बहुत ऊंचा और विशाल है ।

काफी समय तक महेंद्रनाथ को उसका कोई द्वार नहीं दिखा । उसने उस के चारों ओर की दीवार की पूरी परिक्रमा की ताकि कहीं कोई रास्ता दिख जाये । उधर अंधेरा काफी हो चुका था । फिर एकाएक उसे ढलान पर पत्थर काटकर बनायी गयी कुछ सीढ़ियां दिखाई दीं । ये सीढ़ियां एक लोहे के फाटक की ओर जाती थीं । वह उन्हीं सीढ़ियों से होकर ऊपर गया । उसने देखा कि फाटक सांकल से बंधा है । वह कुछ देर तक उस सांकल को बजाता रहा । फिर उसने देखा कि कोई व्यक्ति लालटेन लिये नीचे आया है । वह व्यक्ति जैसे ही उसके निकट हुआ, एकाएक बोल उठा, "ओह! मैंने सोचा मालिक आ गये हैं । तुम कौन हो?" यूं अजनबी को उस द्वार पर पहुंचे देखकर उसे बड़ा ताज्जुब हो रहा था । अजनबी का चेहरा देखने के लिए वह लालटेन को ऊंचा उठाये हुए था ।

"मैं वीरगिरि का रहने वाला महेंद्रनाथ हूं । मुझे वहां कोई काम नहीं मिल पाया, इसीलिए मैं यहां हिमगिरि में काम की तलाश में चला आया । मुझे बताया गया था कि इस पहाड़ में एक छोटा रास्ता भी है । लेकिन

मुझे यहां पहुंचते-पहुंचते तीन दिन लग गये । क्या मैं यहां रात रुक सकता हूं? सुबह होते ही मैं हिमगिरि के लिए रवाना हो जाऊंगा । रात काफी हो चुकी है । मुझे डर है कि मुझे रास्ता नहीं मिलेगा ।"

उस व्यक्ति ने सांकल हटाकर फाटक खोल दिया । "मैं यहां दरबान हूं । वहां ऊपर मेरे लिए एक कमरा है । तुम मेरे साथ उस कमरे में रह सकते हो ।" दरबान ने महेंद्रनाथ को भीतर कर लिया और सांकल को फिर लगा दिया । अब वह अपने हाथ में लालटेन थामे महेंद्रनाथ से थोड़ा आगे-आगे चल रहा था ।

कमरे में दाखिल होने से पहले उन्हें एक बरामदा भी पार करना पड़ा । वहां दरवाजा थोड़ा खुला था । "तुम यहां आराम करो । मैं तुम्हारे लिए कुछ खाना लेकर आता हूं ।" दरबान ने कहा, "अजनबियों के लिए और भीतर जाना मना है । हमें इसके बारे में कड़ी हिदायत है । अगर मेरे मालिक यहां होते तो मैं तुम्हें यहां तक भी नहीं ला सकता था ।"

"तुम्हारे मालिक कब आयेंगे? न भई, मैं नहीं चाहता कि मेरी खातिर तुम्हें उनसे फटकार मिले । मैं सुबह-सुबह ही चला जाऊंगा ।"

"कोई बात नहीं । मेरे मालिक हैं तो बहुत सख़्त, लेकिन हैं बड़े दयालु । अगर उन्हें पता चल जाता कि तुम किस हालत में यहां तक पहुंचे हो तो वह निश्चय ही तुम पर दया करते । इसमें रत्ती भर भी संदेह नहीं ।" दरबान ने महेंद्रनाथ को सहज करते हुए कहा

"अच्छा, अब मैं तुम्हारे लिए खाना ले आऊं!" और यह कहकर वह दरवाज़ा बंद करके कमरे से बाहर चला गया ।

अब तक तो सब ठीक ही है,, महेंद्रनाथ उस व्यक्ति की वापसी का इंतजार करते हुए सोचने लगा । पर यह जगह तो बड़ी विचित्र दिखती है- उतनी ही विचित्र जितना कि इसका मालिक है । मेरा नहीं ख्याल कि राजकुमारी को इस बियाबान में, इतनी दूर लाकर रखा गया हो । यहां वक्त बरबाद करने में कोई तुक नहीं दिखती । मुझे कल ही यहां से

चल देना चाहिए ।

कमरे का दरवाजा खुला और दरबान खाने की थाली के साथ लौट आया । "ज़्यादा तो नहीं मिला, बस, यही कुछ मिल पाया है," उसने क्षमा-याचना के स्वर में कहा । "इससे तुम्हारी भूख कुछ तो शांत होगी!"

"तो तुम अपने मालिक की राह देख रहे थे? कब आयेंगे वह?" महेंद्रनाथ ने ऐसे ही उड़ते-उड़ते पूछ लिया ।

"मुझे नहीं पता । किसी दिन भी आ सकते हैं । जब वे चले जातेहैं, तभी हमें पता चलता है । लेकिन यह हमें कभी नहीं बताया जाता कि वह कब तक केलिए गये हैं । वह कभी भी लौट सकते हैं । इसीलिए हमें हमेशा सतर्क रहना पड़ता है ।" दरबान ने अपनी बात विस्तार से कही ।

"तुमने कहा, हम । और यहां कौन हैं? क्या तुम्हारे मालिक का परिवार यहां रहता है?" महेंद्रनाथ ने प्रश्न किया । उसकी उत्सुकता धीरे-धीरे बढ़ रही थी ।

"मैंने उनके परिवार को कभी नहीं देखा । वह अपने कक्ष में हमेशा अकेले ही रहते हैं । कई बार तो वह अपने कमरे से दिन भर बाहर नहीं आते । कभी-कभी दो दिन तक भी भीतर ही रहते हैं । हम उनका खाना उनके पास तभी लेकर जाते हैं जब वह मांगते हैं । जिन लोगों को उनके पास जाने का अवसर मिला है, उनका कहना है कि उनके चारों तरफ़ कागज़ ही कागज़ या पुराने-पुराने ग्रंथ पड़े रहते हैं । वह अक्सर फर्श पर बनी कुछ आकृतियां और रेखचित्र ही देखते रहते हैं । हाल ही में यहां एक महत्वपूर्ण महिला आयी थीं । मालिक पूरे दो दिन तक उसके साथ भीतर ही रहे । शायद वह इनसे कुछ पूछना चाहती थी । जब वह बाहर आये तो उन्होंने खाना तक नहीं मांगा, बल्कि ऐसे ही जल्दी में चले गये । इसीलिए मैंने कहा कि वह कभी भी लौट सकते हैं ।"

किसी महिला संबंधी "वह" शब्द महेंद्रनाथ के मन में अटक गया । अगर राजकुमारी के बारे में कोई संकेत मिले तो वह यहां कुछ दिन और रुकने के लिए तैयार है । वह इसके लिए कोई-न-कोई तरीका ढूंढ ही निकालेगा । (जारी)

# व्यापारी का स्वार्थ

अपनी धुन का पक्का राजा विक्रम फिर श्मशान में उस पेड़ के पास गया, पेड़ की एक शाखा से लटकती लाश को अपने कंधे पर डाला और मौन साधे श्मशान को पार करने लगा । तब उस लाश में मौजूद बैताल बोला, "हे राजन्, इस आधी रात के वक्त इस भयावह श्मशान में से, इतना कष्ट उठाकर, निकलते हुए आपको देखकर मुझे लगता है कि आप किसी महान कार्य को साधने का प्रयत्न कर रहे हैं । क्या आपको कभी यह शक तो नहीं हुआ कि अपने जीवन काल में आप यह कार्य शायद न साध सकें? दरअसल, बहुत से लोग अपने बूते से बाहर की इच्छाएं पालते हैं और उनकी पूर्ति की आशा बांधे रहते हैं । लेकिन उनमें तार्किक बुद्धि का अभाव होता है और वे मानव स्वभव की गहराइयों तक उतरने वाली समझदारी भी नहीं रखते । इसलिए अक्सर उन्हें निराशा का मुंह देखना पड़ता है । कई

## बैताल कथाएं
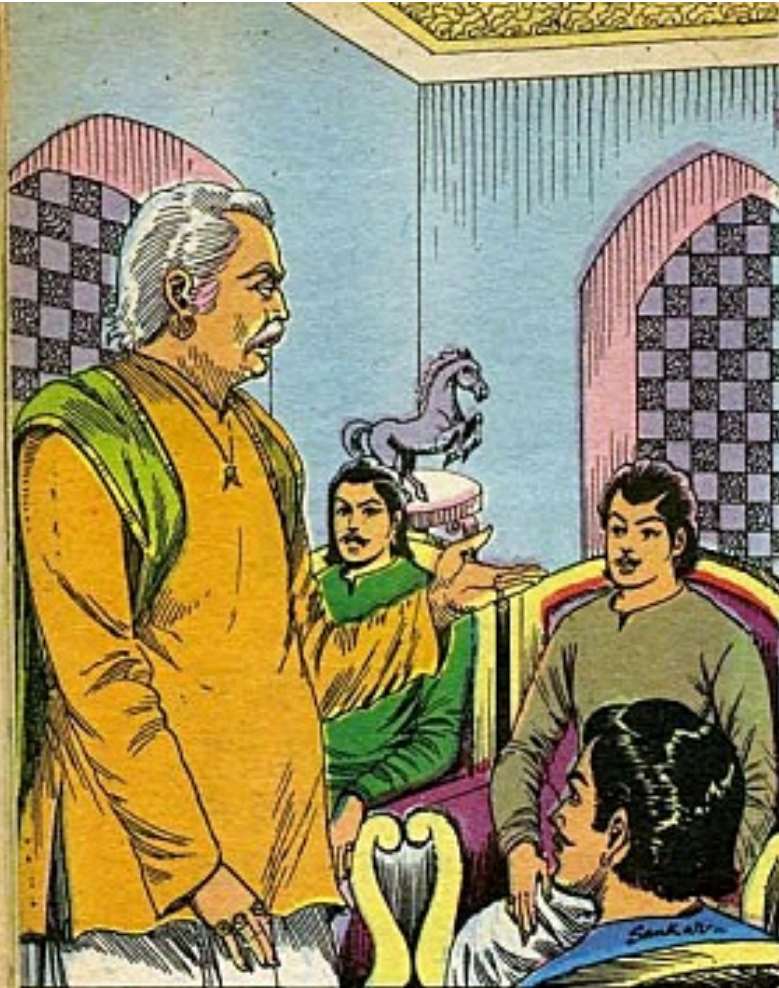
बार ऐसा भी होता है कि जब ये लोग स्वयं कुछ साध नहीं पाते तो अपने उत्तराधिकारियों पर आस लगाये बैठे रहते हैं। किंतु इस प्रयास में भी वे पराजित होते हैं। अपनी बात को और स्पष्ट करने के लिए तथा आपको सावधान करने के लिए मैं आपको धनगुप्त नाम के सौदागर की कहानी सुनाता हूं। आप इसे ध्यान से सुनें ताकि आपका वक्त कट जाये और आपको थकान भी महसूस न हो।" फिर बैताल राजा विक्रम को वह कहानी सुनाने लगा :

पुराने समय की बात है। उन दिनों भाग्यनगर में एक व्यापारी रहता था। उसका नाम धनगुप्त था। वह अपने व्यापार में बहुत कुशल था, लेकिन हर किसी का लिहाज़ करना उसके स्वभाव में था। इसका उसके हर बंधु-बांधव ने नाजायज़ फ़ायदा उठाया।

वे सब अधिकतर स्वार्थी निकले। किसी-न-किसी तरह वे धनगुप्त को बातों में फंसाकर या ठगकर अधिक से अधिक पैसा ऐंठने की फिराक में रहे। इस तरह काफी वक्त गुजर गया और धनगुप्त के इस प्यारे स्वभाव की वजह से उसके बंधु-बांधव लाभ उठाते ही रहे। आखिर, असलियत का पता तो धनगुप्त को चल गया, लेकिन तब जब वह बूढ़ा हो चुका था।

धनगुप्त के तीन पुत्र थे—आनंद, विनोद और विवेक। एक दिन उन तीनों पुत्रों को बुलाकर धनगुप्त ने कहा, "मेरे प्यारे बच्चो, मैं तुम्हें एक काम की बात बताना चाहता हूं। अगर व्यापार में पड़ना है तो याद रखो कि सामर्थ्य के साथ-साथ स्वार्थ का होना भी ज़रूरी है। मुझ में इस स्वार्थ का अभाव था। इसीलिए मेरे बंधु-बांधव मुझे विश्वास में लाकर धोखा देते रहे। अब मैं अच्छी तरह जानता हूं कि उनकी वजह से मैंने काफी घाटा उठाया है। आज हमें करोड़पति होना चाहिए था। किंतु हम केवल लखपति ही रह गये। परोक्ष रूप से इसके पीछे तुम लोगों की काबिलियत है, वरना हम लखपति भी न रहते। इसलिए मुझे तुम लोगों की काबिलियत पर पूरा-पूरा विश्वास है। अब मैं तुम लोगों से एक वचन मांगता हूं। क्या तुम मेरी एक इच्छा पूरी करोगे?"

तब तीनों पुत्रों ने विनीत स्वर में कहा, "हम भी जानते हैं पिताजी कि एक व्यापारी को स्वार्थी भी होना चाहिए। आप जिस मार्ग पर चल रहे थे, वह हमें पसंद नहीं था। लेकिन आपके प्रति अपने आदरभाव के कारण हमने आपकी हर आज्ञा का पालन किया और आपके खिलाफ ऐसा एक कदम भी नहीं उठाया जो आपकी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल हो। बेशक, व्यापार में स्वार्थ का होना आवश्यक है, लेकिन अपने पिता के प्रति कोई स्वार्थी कैसे हो सकता है? हम आप के प्रति अपना कर्तव्य अच्छी तरह जानने हैं। आप आज्ञा दें। आप हमसे जैसा भी वचन मांगेंगे, हम उसकी पूर्ति करने के लिए तैयार हैं।"

अपने पुत्रों के मुंह से ऐसी बात सुनकर धनगुप्त बहुत खुश हुआ और बोला, "कई लोगों का कहना है कि अगर मेरा व्यापार ठीक से नहीं चला तो इसका कारण मेरा अपना घर ही है। मैंने अपने गाढ़े पसीने की कमाई से यह घर बनवाया था। इसलिए मुझे इसके प्रति बड़ा स्नेह है। मैं चाहता हूं कि इसी घर में मैं अपने प्राण छोड़ूं। मैं यह घर घोड़ना बिलकुल नहीं चाहता। लोग कहते हैं कि यह घर दोषपूर्ण है। यह सुनकर मुझे बहुत दुःख होता है। वे स्वार्थी लोग इस घर को सस्ते में हड़प लेना चाहते हैं। इसीलिए वे लोग ऐसा दुष्प्रचार करने के लिए भी नहीं कतरा रहे हैं। तुम लोगों को यह साबित कर देंना चाहिए कि इस घर में इस प्रकार का कोई दोष नहीं। इसमें रहकर तुम्हें करोड़ों की कमाई करनी चाहिए ताकि हम करोड़पति कहलायें। बस यही मेरी इच्छा है।"
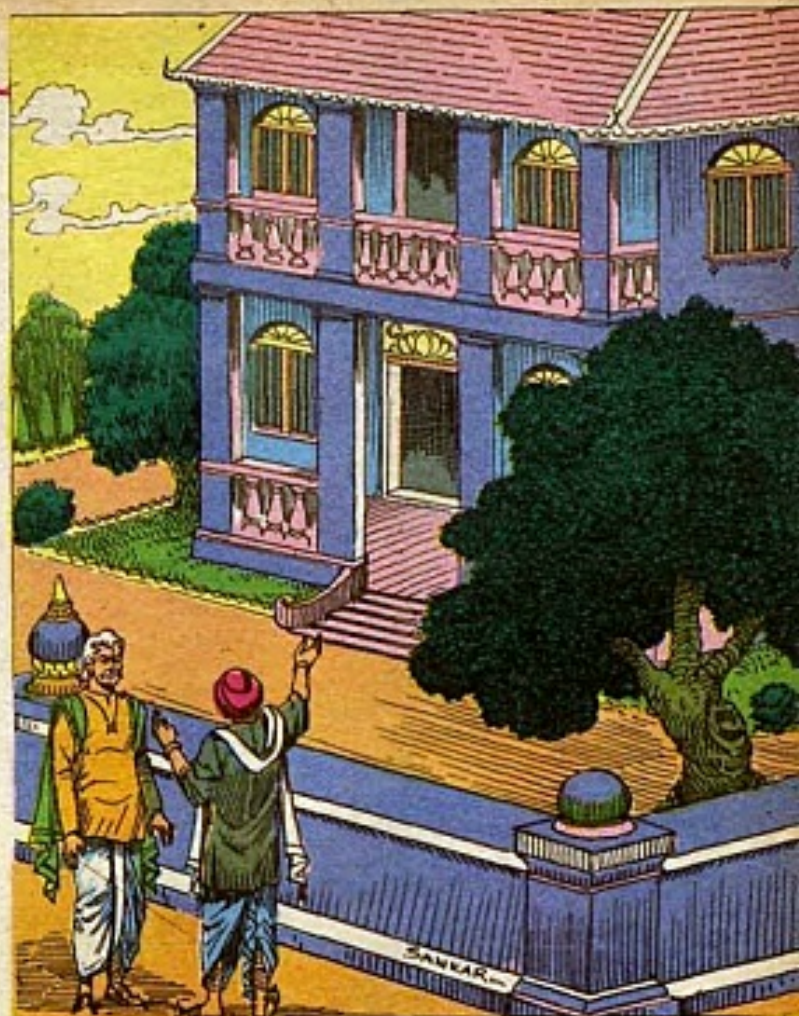
आनंद और विनोद ने तुरंत स्वीकारात्मक ढंग से अपने-अपने सर हिला दिये, लेकिन विवेक ने कहा, "पिताजी, आपने अपनी गलती जान ली। लगता है इसके बावजूद आप इस जन्म में नहीं बदलेंगे, क्योंकि अपने बंधु-बांधवों के प्रति आप कठोर नहीं हो सकते। इसलिए सबसे पहले आपको चाहिए कि आप व्यापार से हट जायें। मेरे ख्याल से यह बहुत ज़रूरी है।"

इस प्रस्ताव को धनगुप्त ने स्वीकार कर लिया। इस पर विवेक फिर बोला, "व्यापार

एक ही हाथ में रहे तो वह फले-फूलेगा। इसलिए आप से मेरा निवेदन है कि आप हममें से जिसे योग्य समझते हैं, उसी पर इस व्यापार का दायित्व छोड़ दें।"

धनगुप्त ने इस प्रस्ताव को भी स्वीकार कर लिया और बोला, "तुम तीनों समर्थ हो, विवेकवान हो, यह मैं अच्छी तरह जानता हूं। जो मेरी इच्छा की पूर्ति करना चाहता है, वह आगे तरक आये। बाकी दोनों के लिए मैं अलग से पैसे का इंतज़ाम किये देता हूं ताकि वे अपना-अपना व्यापार नये सिरे से शुरू कर सकें।"

तीनों बेटे थोड़ी देर तक आपस में विचार-विमर्श करते रहे। नये सिरे से व्यापार शुरू करने के बजाय वे अपने पिता के चल रहे व्यापार को ही आगे बढ़ना बेहतर समझते थे। इसलिए वे फौरन किसी नतीजे पर पहुंच न पाये, बल्कि थोड़ी देर तक असमंजस में पड़ गये।

इसलिए अब धनगुप्त को ही कहना पड़ा, "अच्छा, इसका हल मैं ही सुझाता हूं। मैं तुम तीनों से एक सवाल पूछूंगा। जो उस सवाल का सही उत्तर देगा, उसी को मैं अपना व्यापार सौंप दूंगा।"

तीनों बेटे इसके लिए रज़ामंद हो गये। तब उनसे धनगुप्त ने पूछा, "यदि इसी क्षण तुम तीनों के सामने भगवान् प्रकट हो जायें और कोई वरदान मांगने को कहें तो तुम क्या मांगोगे?"

आनंद ने तुरंत कहा, "मैं भगवान से कहूंगा कि वह समूचे संसार का धन मुझे दे दे।"

विनोद ने भी लगभग वही कहा जो आनंद ने कहा था।

लेकिन विवेक ने हंस कर कहा, "इसमें सोचने की क्या बात है, अगर भगवान् सचमुच मेरे सामने प्रकट हो जायें और मुझे वरदान देना चाहें तो मैं बेशक उनसे वही मांगूंगा जो किसी एक सहृदय व्यक्ति को मांगना चाहिए।"

"अच्छा, वह क्या है?" धनगुप्त की उत्कंठा जगी।

"यही कि सभी मानव सुख-शांति से रहें और समृद्धि पायें, वे स्वस्थ रहें और भाग्यशाली हों।" विवेक ने बिना किसी

आवेग के उत्तर दिया।

विवेक का यह उत्तर सुनकर दोनों भाई ठठाकर हंस दिये, लेकिन धनगुप्त नहीं हंसा। वह कुछ सोचता रहा और फिर उसकी प्रशंसा करते हुए उसने व्यापार की ज़िम्मेदारी उसी को सौंप दी।

यह देखकर आनंद और विनोद भौंचक रह गये। तब धनुप्त ने ही उनसे कहा, "तुम तीनों ही सामर्थ्य रखते हो। इसलिए तुम्हारे सामर्थ्य को जानने के लिए मुझे किसी प्रकार का सवाल करने की ज़रूरत नहीं थी। क्योंकि मैं तुम्हें बचपन से ही देखता आ रहा हूं। मैंने शुरू में ही कहा था कि व्यापार में सामर्थ्य के साथ-साथ स्वार्थ की भी ज़रूरत होती है। लेकिन किसी के स्वार्थ को पहचानना कोई आसान काम नहीं। ऐसे सवालों के जब जवाब आयेंगे, तभी किसी के स्वार्थ का पता चलेगा। तुम दोनों से बढ़कर होशियार स्वार्थी निकला तुम्हारा छोटा भाई विवेक। इसीलिए मैं अपने व्यापार का दायित्व उसी पर छोड़ रहा हूं।"

बैताल ने कहानी खत्म करते हुए कहा, "राजन्, धनगप्त स्वार्थ का महत्व तो जानता था, लेकिन अपने बंधु-बांधवों के प्रति लिहाज़ रखने के कारण वह उनके धोखे का शिकार हो जाता था और इसीलिए वह करोड़पति नहीं बन पाया। उसके मेहनत से बनवाये घर को कुछ लोगों ने दोषपूर्ण क़रार देकर उसे यों ही हड़प जाने की कोशिश की। धनगुप्त बूढ़ा तो हो ही चुका था, लेकिन करोड़पति बनने की इच्छा उसमें अब भी बाकी थी। ऐसी स्थिति में वह अपना व्यापार एक विवेकवान और समर्थ व्यक्ति के हाथों सौंपना चाहता था ताकि सब कुछ सुरक्षित रहे और उसका करोड़पति बनने का सपना धूमिल न हो जाये। पर इस इच्छा की पूर्ति के लिए स्वार्थहीन विवेक को वह सारी ज़िम्मेदारी सौंपना क्या मुर्खता नहीं कहलायेगी? विवेक ने कहा कि वह भगवान् से चाहेगा कि सब सुख-शांति से रहें और स्वास्थ्य और स्मृद्धि पायें। ऐसे व्यक्ति के हाथों क्या व्यापार कभी पनप सकता है? निश्चित रूप से धनगुप्त ने ठीक निर्णय नहीं लिया। मैं अपने इन संदेहों का निराकरण
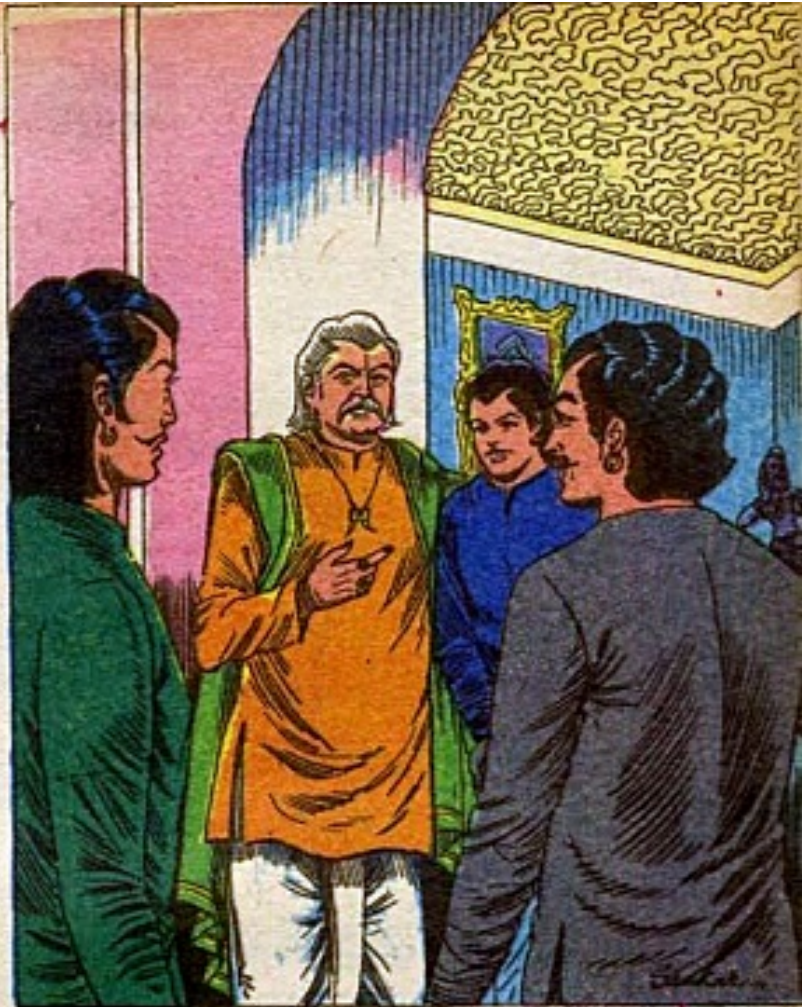
चाहता हूं । अगर आप इनका सही उत्तार जानते हुए भी चुप रहेंगे तो आपका सर फट जायेगा ।"

मजबूर होकर राजा विक्रम को कहना ही पड़ा, "ज़िदंगी बसर करने के लिए, लोग मौके के मुताबिक, अपनी शक्ति के अनुरूप, अलग-अलग किस्म के पेशे अख़्तियार करते हैं । इसलिए सब के अनुभव एक जैसे नहीं होते । उनके निर्णय भी इसी प्रकार उनकी मन:स्थिति और विचारों की गहराई पर निर्भर करते हैं । धनगुप्त ने अपने अनुभव के आधार पर जान लिया था कि किसी व्यापारी केलिए सामर्थ्य रखने के साथ-साथ स्वार्थी होना भी ज़रूरी है । उसके बेटों ने उसके प्रश्न के जो उत्तर दिये, उन्हें सुनकर धनगुप्त को पता चल गया कि उसके तीनों बेटे एक से एक बढ़कर स्वार्थी हैं । लेकिन स्वार्थी के लिए यह भी ज़रूरी है कि उसके स्वार्थ के बारे में किसी को कुछ भी पता न चले । उसके दोनों बड़े बेटे यहीं मात खा गये । उन्हें चाहिए था कि वे अपने स्वार्थ पर छद्म चढ़ाये रखते । तभी स्वार्थ उपयोगी सिद्ध हो सकता है । मूर्ख को स्वार्थ से हानि होगी, लेकिन बुद्धिमान उसी स्वार्थ से लाभ उठा लेगा । धनगुप्त का छोटा बेटा इतना होशियार निकला कि उसने अपने स्वार्थ के बारे में अपने पिता तक को भी पता नहीं चलने दिया । यदि भग्वान् उसके सामने वाकई प्रकट हो जाते तो वह दूसरों की सुख-शांति और स्वास्थ्य-समृद्धि की कभी मांग न करता ।वह क्या मांगता, इसके बारे में वह किसी को कुछ न बताता । यह असलियत जानकर ही धनगुप्त ने अपने व्यापार की ज़िम्मेदारी विवेक पर डाली ।"

बैताल को उत्तर देने से राजा विक्रम का मौन भंग हो चुका था । इसिलए बैताल वहां से लाश-समेत ग़ायब हो गया और फिर पहले की तरह श्मशान में पेड़ की उसी शाखा से जा लटकने लगा । —(कल्पित)

[आधार : श्रीराम कमल की रचना ]

# चोरी ऐसे पकड़ी

एक बार रामशास्त्री नाम का एक पंडित राजा के पास गया और अपने पांडित्य का प्रदर्शन किया । इस पर राजा खुश हुआ और उसने उसे पुरस्कार में कुछ सोना और चांदी दिये । सोना और चांदी लेकर रामशास्त्री अपने गांव को लौट पड़ा । लेकिन रास्ते में उसके बड़े भाई शंकरशास्त्री का गांव पड़ता था । वह उस गांव में रुका

शंकरशास्त्री के दिन काफी तंगी में बीत रहे थे । अपने छोटे भाई के पास इतना सोना और चांदी देखकर उसके मन में ईर्ष्या पैदा हुई । उस रात जब रामशास्त्री सो गया तो शंकरशास्त्री ने उसकी सोने-चांदी वाली वह थैली उठा ली और उसे कहीं छिपा दिया ।

सुबह जब रामशास्त्री को उसकी थैली कहीं दिखाई नहीं दी तो उसे बड़े भाई से इसके बारे में पूछताछ करनी पड़ी ।

"ओह! यह तो बड़ा अनिष्ट हुआ ।" शंकरशास्त्री ने झूठी हमदर्दी दिखाते हुए कहा । "जरूर यह किसी चोर-उचक्के का काम है ।"

रामशास्त्री की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे । उसके मन में संदेह बना रहा कि यह उसके बड़े भाई की ही कारस्तानी है । लेकिन वह नहीं चाहता था कि उस पर चोरी का इल्ज़ाम आये ।

आखिर उसे मजबूर होकर गांव के पटेल के पास जाना पड़ा । वहां उसने उसे सारी बात बतायी और उससे कोई उपाय ढूंढ़ने के लिए अनुरोध किया । पटेल काफी होशियार था । वह थोड़ी देर तक सोचता रहा और फिर उसने रामशास्त्री को उसके कान में एक उपाय बताया ।

पटेल के यहां से रामशास्त्री अपने भाई के यहां आया । लेकिन इतने में दो व्यक्ति आये और उसके हाथ बांधकर उसे फिर

२५ वर्ष पूर्व चंदामामा में प्रकाशित कहानी

पटेल के यहां ले चले। शंकरशास्त्री की समझ में नहीं आया कि उसके छोटे भाई ने कौन-सा अपराध किया है।

रामशास्त्री के साथ-साथ शंकरशास्त्री भी पटेल के यहां पहुंचा। शंकरशास्त्री को देखते ही पटेल बोला, "देखिए शास्त्री जी, आप तो ठहरे एक इज़्ज़तदार व्यक्ति! लेकिन आपके छोटे भाई ने जो कारगुज़ारी की है, मुझे उस पर विश्वास नहीं हो रहा। अभी-अभी राजधानी से खबर आयी है कि आपके छोटे भाई, रामशास्त्री, ने राजा के यहां से कुछ सोना और चांदी चुराये है। आपकें भाई का सुराग राजा को किसी व्यक्ति ने दे दिया था। इसीलिए राजा ने मुझे खबर भेजी है कि मैं इस चोरी का पता लगाऊं। अब मुझे आपके घर की तलाशी लेनी होगी। मुझे बड़ा अफसोस है, लेकिन मैं लाचार हूं। मुझे अपना काम तो करना ही होगा। इसमें आप कृपा करके मेरी मदद कीजिए।"

पटेल की बात सुनकर शंकरशास्त्री का चेहरा उतर गया। उसके भीतर ज़बरदस्त खलबली मच गयी।

कुछ ही देर में पटेल के आदमी शंकरशास्त्री के घर में आ धमके और लगे इधर-उधर निगाहें घुमाने। रामशास्त्री अभी तक पटेल के यहां ही बंदी बना बैठा था। लेकिन इससे पहले कि पटेल के आदमी शंकरशास्त्री से कुछ पूछें, उन्होंने देखा कि सोने-चांदी की वह थैली रामशास्त्री वाले बिस्तर के सरहाने पड़ी है। उन्होंने फौरन उस थैली को उठाया और पटेल के यहां लौट गये।

रामशास्त्री को अपनी थैली वापस मिल गयी थी। वह थोड़ी देर बाद ही अपने बड़े भाई के यहां लौट आया। उसके हाथ में वही थैली थी। आते ही बोला, "राजा के यहां से एक और खबर आयी है। उसने कहला भेजा है कि उन्हें गलतफहमी हुई थी, और मैं बिलकुल निर्दोष हूं। यह सोना-चांदी तो राजा ने स्वयं मुझे पुरस्कार में दिये थे। खैर, अब मैं चलता हूं।"

और यह कहकर रामशास्त्री अपने भाई के यहां से चला आया।

# चन्दामामा परिशिष्ट-४८

भारत के पशु-पक्षी

## क्रीड़ाप्रिय पंडा

छोटे-छोटे बच्चों को खिलौने के रूप में 'टेडी बेअर' बहुत पसंद है । क्या तुम जानते हो कि बच्चों का प्यारा यह खिलौना ऑस्ट्रेलिया के क्वाला भालू की नकल है?

भारत के पंडे की क्वाला पंडे से तुलना की जा सकती है । यह बड़ा सुंदर जानवर है । इसका सर गोल और टांगें भालू की टांगों जैसी छोटी होती हैं । सर से लेकर पूरे शरीर की लंबाई ६० सें.मी. के करीब होती है, जब कि पूंछ की लंबाई लगभग ४० सें.मी. होती है । इसके कान कुछ ज़्यादा बड़े और सीधे होते हैं । वे नुकीले नहीं होते । थूथनी मोटी और भारी होती है । पूंछ छल्लेदार होती है । रंग चमकीला भूरा-लाल । पूंछ का रंग ज़ंग की तरह का भूरा । शरीर का निचला हिस्सा काला, लेकिन सर सफेद ।

पंडे उत्तरी भारत के पर्वतीय स्थलों पर काफी ऊंचाई पर मिलते हैं । दिन के वक्त वे किसी पेड़ की शाखा पर सीधे लेटकर आराम से सोते हैं । शाम के वक्त या सुबह तड़के वे खाने की तलाश में निकलते हैं । इनके खाने में बांस की छोटी-छोटी टहनियां, रसीले पौधे, फल और कंदमूल रहते हैं । कभी-कभी ये अंडे भी खाते हैं । ये बड़ी हल्की सीटी की सी आवाज़ निकालते हैं । कई बार लोग इसे पक्षियों का चहचहाना भी समझ बैठते हैं । पंडे की खाल के बालों (समूर) की ऊंची कीमत पड़ती है ।

प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को अपने पंडों के साथ अक्सर खेलते देखा जा सकता था । ये पंडे उन्होंने अपने निवास, तीनमूर्ति भवन, के उद्यानों में पाल रखे थे ।

# आज का भारत साहित्य-दर्पण में

[भारत एक विशाल देश है जिसमें सदियों से कई भाषाएं और कई संस्कृतियां पनपती रही हैं । भारत की प्रत्येक मुख्य भाषा का साहित्य बहुत ही समृद्ध है । हमें पुरातन काल के महान ग्रंथों के बारे में कुछ-न-कुछ तो जानकारी रहती ही है, लेकिन हमें अपने समय की उत्कृष्ट कृतियों के बारे में बहुत कम जानकारी है । इन पृष्ठों में चंदामामा तुम्हें हमारे इस युग के कुछ उपन्यासों की कथाएं बतायेगा । ये उपन्यास भारत की विभिन्न भाषाओं में लिखे गये हैं । कथाओं का विवरण बहुत संक्षेप में रहेगा । लेकिन हमें उम्मीद है कि इससे हमारे पाठकों को ये कृतियां मूल रूप में या अनूदित रूप में पढ़ने की प्रेरणा मिलेगी । —संपादक]

## ताराशंकर बंद्योपाध्याय का "गणदेवता"

इस उपन्यास की पृष्ठभूमि में है इसी शताब्दी के दूसरे दशक के बंगाल का एक गांव ।

इस गांव का नाम शिवपुर है । शिवपुर का श्रीहरि केवल अपना हित ही जानता है, उसे और किसी की चिंता नहीं । वह दूसरों को मिटाकर अमीर बनना चाहता है । उसकी इच्छा यह है कि वह गांव का सबसे अमीर आदमी बन जाये ।

जो लोग उसका विरोध करने का साहस करते हैं, उनके प्रति वह बहुत ही निरंकुश है । अगर वह अपने पर आ जाये तो वह चुपके से गरीबों की झोंपड़ियों में आग लगवाने से भी नहीं चूकेगा । लेकिन जब उन की हालत खराब हो जाये तो वह उनकी मदद करने के लिए आगे भी आयेगा । वैसे लोग उसके बारे में चाहे कुछ भी सोचें, उसके मुंह पर उन्हें उसकी तारीफ ही करनी पड़ती है । तब वह फूलकर कुप्पा हो जाता है और उसकी आकांक्षाएं और बढ़ जाती हैं ।

लेकिन अब गांव के लोगों में नयी चेतना जन्म ले रही है । गांव का लोहार और नाई बिना उचित उजरत लिये किसी का काम करने को तैयार नहीं । अब यहां आये दिन झगड़े-फ़साद होने लगे हैं ।

गांव के ज़्यादातर लोग साधारण हैं । उनकी आकांक्षाएं भी साधरण हैं । लेकिन कुछ लोग असाधारण हैं । उनमें देबू सबसे अलग है । वह एक शिक्षक है जो उच्च-आदर्शी होने के साथ-साथ साहसी भी है । दूसरा व्यक्ति है जगन । वह चिकित्सक है । वह रोगियों का इलाज तो पूरे मनोयोग से करता ही है, साथ

में समाज के लिए हमेशा कोई-न-कोई अच्छा काम भी कर जाना चाहता है ।

सरकार भूमि का सर्वेक्षण कर रही है । सर्वेक्षण करने वाला एक अदना कर्मचारी देबू के साथ दुर्व्यवहार करता है । जब देबू इसका प्रतिकार करता है तो वह मारे गुस्से के सातवें आसमान पर पहुंच जाता है । देबू के खिलाफ एक झूठी रपट दर्ज करायी जाती है जिसके परिणामस्वरूप उसे गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया जाता है । विदेशी (ब्रिटिश) शासन एवं दूसरे प्रकार के अत्याचारों के प्रति लोगों के मन में काफी गुस्सा है । देबू लोगों के साहस का प्रतीक बन जाता है । जिस दिन उसे पुलिस पकड़कर ले जाती है, गांव वाले उसका गुणगान करते हुए एकजुट होकर नारे लगाते हैं ।

एक साल बाद देबू की रिहाई होती है । इसी बीच गांव में जतिन नाम का एक क्रांतिकारी भी आकार रहने लगा है । श्रीहरि अब नया ज़मींदार बन गया है । उसने पुराने ज़मींदार की पूरी संपत्ति खरीद ली है । जिस ज़मीन पर किसी का भी कब्ज़ा नहीं है, वह कानूनी तौर पर ज़मींदार की मानी जाती है । लेकिन लोग उसे चरागाह के रूप में काम में लाते हैं और वहां पर अपने ढोर-डंगर चराते हैं । इसी प्रकार इस ज़मीन पर जो भी पेड़ हैं, उन्हें भी साझी संपत्ति समझा जाता है । श्रीहरि उन पेड़ों को कटवाना शुरू कर देता है । गांव वाले इसका प्रतिरोध करते हैं । एक छोटी-सी झड़प में देबू इत्तफाक से ज़ख्मी हो जाता है । रात के वक्त श्रीहरि के बगीचे में लगाये गये नये पेड़ों को कोई काट डालता है ।

इल्ज़ाम देबू पर आता है । उसकी गिरफ़्तारी होने को ही है जब गांव का लोहार, अनिरुद्ध, जो अपनी तरह का एक जान पर खेल जाने वाला व्यक्ति है, अपना बयान देते हुए कहता है कि श्रीहरि का बग़ीचा देबू ने नष्ट नहीं किया, उसने स्वयं नष्ट किया है । अब गिरफ्तारी उसी की होती है ।

गांव में हैज़े की महामारी फैल गयी है । देबू मरने वालों का दाह-संस्कार करने में बराबर हाथ बंटाता है । लेकिन यह काम उसे बहुत मंहगा पड़ता है, क्योंकि इस बीमारी के कीटाणु उसके घर भी चले आये हैं और उन्होंने उसके नन्हे बेटे को दबोच लिया है । पहले उस बालक की मृत्यु होती है, और फिर देबू की पत्नी भी चल बसती है ।

देबू अब अकेला रह गया है । वह तब और भी अकेला महसूस करता है जब क्रांतिकारी जतिन को गांव छोड़ने का आदेश मिलता है । इस बीच जतिन और देबू आपस में मित्र बन गये थे ।

लेकिन जीवन तो यही है, जिसमें चारों ओर से संघर्ष ही संघर्ष झेलना पड़ता है । अगर बल मिलता है तो केवल अपनी आस्था से, जैसे ज़्यादा से ज़्यादा ऊपर उठना है, और केवल थोड़ी सी सुविधा प्राप्त करने के बजाय कुछ महत्वपूर्ण करके जाना है ।

ताराशंकर (१८९८ से १९७१) बंगला के एक विशिष्ट लेखक थे । उन्होंने कई उपन्यास और कहानियां लिखीं । 'गणदेवता', जनसाधारण का देवता, पर उन्हें १९६७ में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया ।

HINDI NOV '92 2B

# क्या तुम जानते हो?

१. संसार में केवल दो टापू-संग्रहालय हैं। एक मिस्र में अबू सिंबल के पास और दूसरा भारत में है। भारत में यह कहां पर है?
२. एक नगर के पास पहाड़ी पर देवी का मंदिर है जहां पहुंचने के लिए पत्थर की एक हज़ार सीढ़ियां चढ़नी पड़ती है? वह मंदिर कौन-सा है?
३. वह कौन-सा देश है जिसने अपनी डाक टिकटों पर कभी अपना नाम नहीं दिया?
४. हमारे राष्ट्रीय ध्वज की सफेद पट्टी के बीचों-बीच कौन सा चिह्न है?
५. म्यांमार (भूतपूर्व बर्मा) की मुद्रा क्या है?
६. रेड क्रॉस का संस्थापक कौन था?
७. एल.ई. वाटरमैन किस आविष्कार के लिए प्रसिद्ध है?
८. सिक्खों के नौवें गुरु कौन थे?
९. उस वाद्ययंत्र का नाम बताओ जिसे अमीर खुसरो बजाया करते थे?
१०. भारत के किस राज्य से काजू सबसे ज़्यादा निर्यात होते हैं?
११. आईफल टॉवर कहां है? उसे किसने बनवाया?
१२. डॉक्टर सेमुअल जॉनसन की विख्यात जीवनी किसने लिखी?
१३. भारत के सबसे पहले सिक्के किस काल के हैं?
१४. भारत के एक देशभक्त की अनशन के कारण मृत्यु हुई। वह कौन था?
१५. ऑपरेशन फ्लड से क्या अभिप्राय है?

## उत्तर

१. आंध्र प्रदेश में नागार्जुनकोंडा।
२. मैसूर के निकट चामुंडेश्वरी का मंदिर।
३. ग्रेट ब्रिटेन।
४. गहरे नीले रंग का अशोक चक्र।
५. क्यात।
६. ज्यां हेनरी दूरां।
७. फाउंटेन पेन।
८. गुरु तेग बहादुर।
९. सरोद।
१०. केरल।
११. पैरिस में। ९८५ फुट ऊंचा इसका निर्माण १८८७-८९ में गुस्ताव आईफल ने करवाया था।
१२. जेम्स बॉसवेल।
१३. ईसा पूर्व ५वीं शताब्दी।
१४. जतिन दास।
१५. दूध का उत्पादन बढ़ाना। इसे श्वेत-क्रांति भी कहा जाता है।

# मेधा का विनाश

चंद्रधर बड़ा बुद्धिमान युवक था। उसकी ग्रहण करने की शक्ति इतनी तेज़ थी कि वह जो भी पढ़ता या सुनता, उसे वह कभी न भूलता। इसलिए बचपन में उसे सब अतिमेधावी कहते थे, हालांकि उसके पिता कहते, "इस गांव में असली मेधावी केवल सुनंद है। अगर वह तुम्हें मेधावी मान ले तो तुम अवश्य मेधावी हो।"

चंद्रधर सुनंद से जाकर मिला। सुनंद ने उससे कई प्रकार के प्रश्न किये और कहने लगा, "तुम्हारा ज्ञान और तुम्हारी स्मरण-शक्ति वाकई तारीफ़ के काबिल है। अब हम गांव के बड़े लोगों को एक जगह बैठायेंगे और फिर हम आपस में मुकाबला करेंगे। शायद तुम ही विजयी रहोगे।"

चंद्रधर ने घर पहुंचकर यह बात अपने पिता को बतायी। उसके पिता ने कहा "इसमें ज़रूर कोई पेच है। ठीक से सोच लो सावधान रहो।"

प्रतियोगिता वाले दिन गांव के अधिकांश लोग भारी संख्या में, उस प्रतियोगिता को देखने चले आये।

ठीक समय पर सुनंद और चंद्रधर भी वहां पहुंच गये और सब का अभिवादन करके वहां बैठ गये।

सुनंद ने चंद्रधर से कहा कि पहले वह कुछ सवाल पूछे। तब चंद्रधर ने सवाल किया, "सूरज का तेज कहां से आता है?"

"इस का जवाब यहां उपस्थित लोगों से पूछा जाये तो सब अपनी-अपनी तरह से जवाब देंगे। इस तेज की प्रामाणिकता को परखने के लिए हम सूरज के पास जा नहीं सकते। जायेंगे तो भस्म हो जायेंगे। यदि शास्त्रों के अनुसार हम सूरज के तेज का कारण बताने लगें तो हम दोनों को छोड़कर और किसी की समझ में कुछ नहीं

चंद्रिका शर्मा

आयेगा । इसलिए तुम ऐसे सवाल पूछो जो यहां बैठे सब लोगों की समझ में आ जायें । आशा है तुम मेरी बात समझ गये होगे ।"

चंद्रधर की समझ में नहीं आया कि वह इस तर्क का क्या उत्तर दे । उसने कहा, "ठीक है, अब आप ही कुछ सवाल पूछिए ।

सुनंद ने तब प्रश्न किया, "चांद की रोशनी कहां से आती है?"

चंद्रधर ने झट से पलटकर उत्तर दिया, "अब आपको भी इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि आप ऐसे ही सवाल पूछें जो यहां बैठ लोगों की समझ में आ जायें ।"

तब सुनंद ने हंसते हुए कहा, "तुम क्या यह समझते हो कि हमारे गांव के लोगों के बुद्धि नहीं है? चांद में स्वयं प्रकाश शक्ति नहीं रहती । जब सूर्य का प्रकाश चंद्रमा पर पड़ता है तो चंद्रमा प्रकाश देने लगता है । यह बात शायद तुम्हें मालूम न हो, लेकिन हमारे गांव का हर व्यक्ति यह जानता है ।" फिर उसने गांव के लोगों को संबोधित करते हुए कहा, "क्यों भई महेश, क्य तुम इत्ती-सी बात भी नहीं जानते?"

यों जब सुनंद एक-एक से वह प्रश्न पूछने लगा तो सब ने अपना सर हां में हिला दिया । तब चंद्रधर ने आवेश में आकर कहा, "आपने अपना विचार अभी-अभी दूसरे ढंग से व्यक्त किया था,एसा क्यों?"

"ठीक है मैंने कहा था, लेकिन क्या तुम्हें चुप हो जाना चाहिए था? क्या तुम यह मानते हो कि हम दोनों के अलावा यहां और कोई बुद्धिमान नहीं है?" और यह कहकर सुनंद
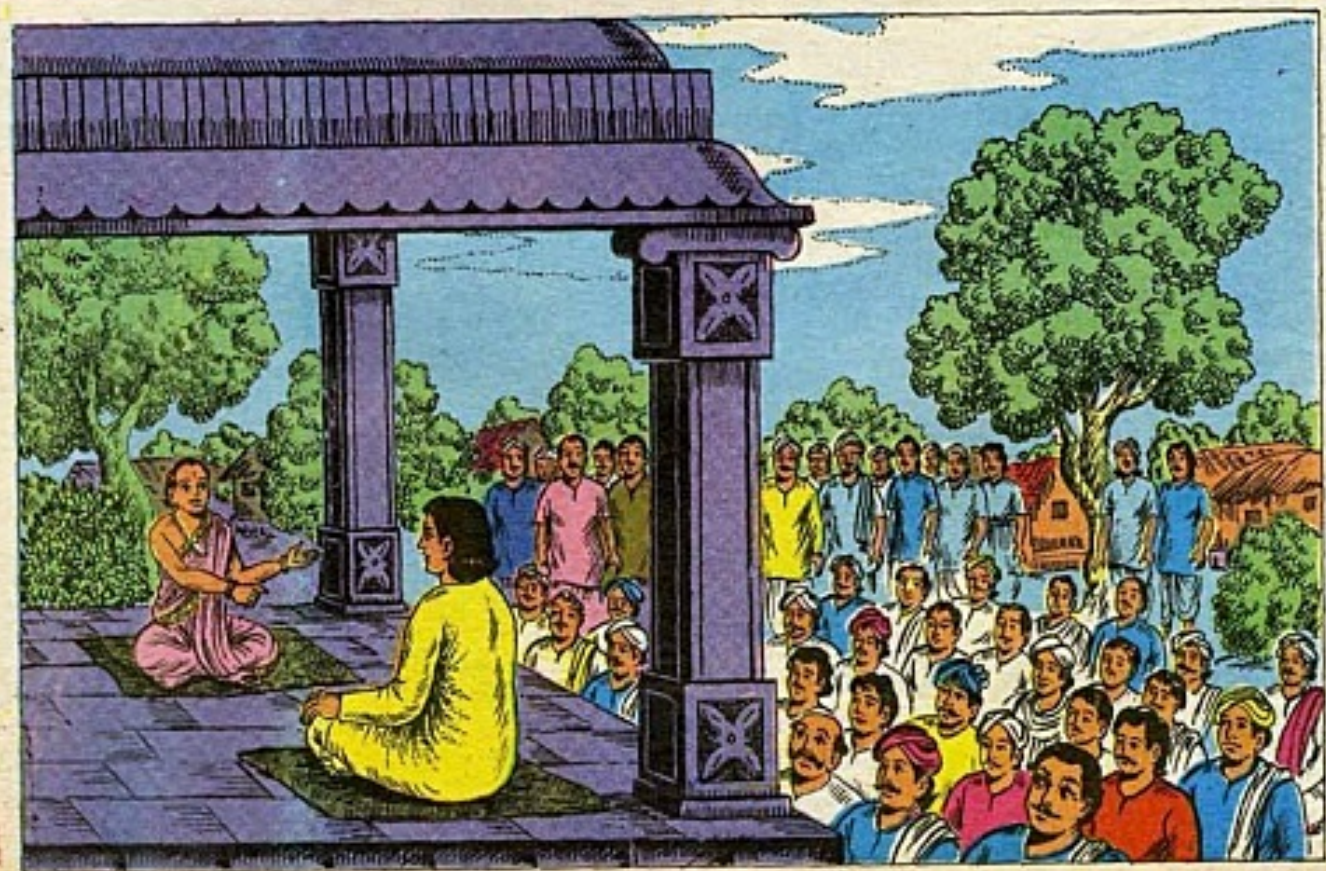
ने एक बार फिर गांव के लोगों को संबोधित करते हुए कहा, "संभव है इस चंद्रधर में थोड़ी सी बुद्धि हो । लेकिन विनम्रता रत्ती भर नहीं है । यह इतना घमंडी है कि केवल अपने को ही बुद्धिमान समझता है, बाकी सब को बुद्धिविहीन । इतनी छोटी उम्र में इतना घमंड! मुझ से मुकाबला करने की इसमें ऐसी छटपटाहट क्यों? यह अपनी राह जा सकता था, मैं अपनी!"

सुनंद की बात सुनकर गांव के सब लोगों ने चंद्रधर को खूब उलटी-सीधी सुनायी । चंद्रधर को यह बड़ा अपमानजनक लगा ।

चंद्रधर जब घर लौटा तो उसके पिता ने उसे खूब डांटा और कहा, "सुनंद के सामने तुम टिक नहीं सकते । अगर तुमने मेरी बात मान ली होती तो तुम इस तरह अपमानित न होते । क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि प्रतिद्वंद्वी के प्रहार से कैसा बचा जाता है? यह जानना तुम्हें बहुत ज़रूरी था ।"

पिता की बात सुनकर चंद्रधर ने कहा, "पिताजी, मैं नहीं जानता था कि सुनंद इस तरह का व्यक्ति है । उसे अब पाठ पढ़ाना ही होगा । यही मेरे जीवन का अब प्रमुख उद्देश्य होगा ।"

उस दिन से च्रदंधर ने नियमित रूप से सुनंद की हर बात को बड़े ध्यान से सुनना शुरू किया । वह उसी तत्परता से उसकी हर गतिविधि को भी देखता था और उसने जो ग्रंथ लिखे थे, उनका लगन से अध्ययन करता था । तब वह कहीं जाकर पकड़ पाया कि सुनंद के कथनों में, उसके व्यवहार और उसके विचारों में क्या कमियां हैं । वह अब

गांव के लोगों के बीच उनका खूब जमकर प्रचार करता ।

गांव के कुछ लोग सुनंद के पास गये और अपनी चिंता व्यक्त करते हुए बोले, "आप जानते हैं कि चंद्रधर आपके बारे में क्या-क्या कहता है?"

उन्हें शांत करते हुए सुनंद ने कहा, "चंद्रधर काफी बुद्धिमान है । यदि उसने मेरी कुछ कमियां पकड़ी हैं तो इसमें मेरी भलाई है । उन्हें सुधारकर मैं और सक्षम हो जाऊंगा । लेकिन अगर वह मुझ में बेमानी कमियां पकड़ने की कोशिश करता है तो उसका ओछापन स्वयं ही सब के सामने आ जायेगा । इसमें मेरी कोई हानि नहीं ।"

लोगों के जाने के बाद सुनंद से उसकी पत्नी ने कहा, "यदि ऐसी ही शांति आप में पहले रही होती तो चंद्रधर आपका कभी शत्रु न बनता । उस दिन आपने बेकार सब के सामने उसकी भद्द कर दी और उससे शत्रुता मोल ले ली । चंद्रधर आपके बारे में जिस तरह का प्रचार कर रहा है, उससे मुझे बहुत दुख है ।"

पत्नी की बात पर सुनंद धीमे से मुस्करा दिया और बोला, "अरी पगली, मैंने जानबूझकर चंद्रधर को भड़काया था । वह वास्तव में बड़ा मेधावी है । लेकिन मैं गांव वालों के सामने यह नहीं मानना चाहता कि यहां मुझसे बढ़कर भी कोई मेधावी है । हां, तुम्हें एक सच्चाई का पता चल जाना चाहिए आवेश व्यक्ति की बुद्धि को नष्ट करता है और जिस व्यक्ति में आवेश होगा, वह हमेशा मूर्ख बना रहेगा । मैंने इसी सच्चाई का सहारा लेकर चंद्रधर को भड़काया । चंद्रधर आवेश में आया और वह प्रतिकार की भावना से सुलगने लगा । अब देख लो, एक मेधावी व्यक्ति भी कैसे बुद्धिहीन और मूर्ख बन जाता है और कैसे अपनी मेधाशक्ति का दुरुपयोग करने लगता है । अब वह सीढ़ी-दर सीढ़ी नीचे सरकता जा रहा है और मैं सीढ़ी-दर-सीढ़ी ऊपर उठता जा रहा हूं । साफ ही है कि इस गांव का एकमात्र मेधावी मैं ही कहलाऊंगा, समझी?"

# क्या वैद्य घमंडी था?

मधुरपुर गांव में श्वेतांबर नाम का एक वैद्य रहता था। वह फोड़ों की चिकित्सा में बड़ा कुशल समझा जाता था।

एक बार उस क्षेत्र का राजा एक बड़े ही भयंकर फोड़े से पीड़ित हो गया। फोड़ा क्या था, व्रण, यानी ज़हरबाद था। उस व्रण की कई वैद्यों ने चिकित्सा की थी, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ था।

उन्हीं दिनों राजा को श्वेतांबर वैद्य के बारे में किसी ने बताया और उसकी बहुत तारीफ की। राजा को विश्वास नहीं हुआ। फिर भी वह विरक्तिभाव से हंसकर अपने मंत्री से बोला, "हम कह नहीं सकते, कौन-सी प्रतिभा कहां छिपी पड़ी है। आप उस वैद्य को बुलवा लीजिए।"

मंत्री ने बिना विलंब किये मधुरपुर से श्वेतांबर को लाने के लिए पालकी भेजी। साथ में कुछ सैनिक भी थे। सैनिकों ने श्वेतांबर के यहां पहुंचकर उसे राजा की ओर से राजधानी पहुंचने का निमंत्रण दिया। राजा का उसे इस तरह आमंत्रित करना बहुत अच्छा लगा।

लेकिन जैसे ही वह चलने को हुआ, उसके मन में एक विचार आया और उसने राजधानी जाने से इनकार कर दिया। बोला, "अगर महाराजा को मेरी चिकित्सा में इतना ही विश्वास है तो वह स्वयं ही यहां क्यों नहीं आये? जाओ, उन्हें यह बता दो।"

श्वेतांबर की बात सुनकर सैनिकों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे जैसे आये थे, वैसे ही राजधानी को लौट गये। उन्होंने राजा तक वैद्य का संदेशा पहुंचा दिया।

उस समय राजा का सेनापति भी वहां मौजूद था। सैनिकों के मुंह से वैद्य की वह बात सुनकर वह तमतमा गया और बोला, "उसकी इतनी हिम्मत! उसे अपनी औकात

शारदा श्रीवास्तव

का अंदाज़ा नहीं? इधर-उधर के कुछ पौधों से रस निकाल लिया और समझ बैठा कि वह दुनिया का सबसे बड़ा वैद्य हो गया। मुझे आज्ञा दीजिए, महाराज। मैं उसे बंदी बनाकर आपके सामने पेश करता हूं।"

लेकिन राजा ने उसे शांत किया और कहने लगा, "बेशक, वह इधर-उधर के पौधों से रस निकालता है, लेकिन याद रखो कि उन पौधों की पहचान भी उसी को है। हमें उसकी निपुणता की प्रशंसा करनी चाहिए। मैं स्वयं ही उसके यहां जाऊंगा। तुम मेरे वहां जाने का प्रबंध करो।"

राजा के जाने का प्रबंध हो गया था। उसने अपने परिवार के कुछ सदस्यों को भी अपने साथ ले लिया। साथ में सेनापति भी था। श्वेतांबर के गांव के बाहर उसके ठहरने की व्यवस्था पहले ही कर दी गयी थी। इसलिए वह वहीं ठहरा।

सेनापति स्वयं वैद्य के घर पहुंचा और उससे बोला, "महाराजा आपके गांव के बाहर आकार ठहरे हैं। क्या यह काफी है या कि उन्हें ठीक यहीं आपके मकान तक आना होगा?" उसके स्वर में व्यंग्य था।

लेकिन वैद्य श्वेतांबर ने सेनापति के व्यंग्य की ओर ध्यान नहीं दिया। वह राजा के पड़ाव तक स्वयं गया और उसका विनम्रतापूर्वक अभिवादन करके उसके ज़हरबाद की जांच करने लगा। फिर उसकी चिकित्सा शुरू करने से पहले बोला, "महाराज, कष्ट को दूर करने के लिए चिकित्सा जितनी ज़रूरी है, पथ्य भी उतना ही ज़रूरी है। इसलिए आपको वही भोजन लेना होगा जो मैं अपने घर से भिजवाऊंगा। इस भोजन को ग्रहण कर पाना आसान नहीं। इसलिए उम्मीद करता हूं कि आप अपनी जिह्वा के स्वाद पर काबू रखेंगे!"

इसके बाद श्वेतांबर ने बड़े मनोयोग से राजा का इलाज करना शुरू किया। उसने कई प्रकार की अनूठी जड़ी-बूटियां इकट्ठा कीं और फिर राजा को उनका सेवन करवाने लगा। एक ही सप्ताह में ज़हरबाद की पीड़ा कम होनी शुरू हो गयी और फिर दूसरे सप्ताह उसका नामोनिशान ही मिटने लगा।

राजा को श्वेतांबर के कौशल पर बहुत प्रसन्नता हुई। उसने उसकी प्रशंसा करते

हुए कहा, "मैं आपकी इस चिकित्सा-पद्धति से बहुत प्रभावित हूं। मैं आपका यह ऋण उतार नहीं सकता। फिर भी अपने संतोष के लिए कह रहा हूं-बताइए, आपको क्या दूं! मेरा खज़ाना आपके लिए खुला है।"

श्वेतांबर के स्वर में पहले से भी ज़्यादा विनम्रता थी। उसने कहा, "प्रभु, मेरे कुछ खेत हैं जिनमें फसल होती है और बाग-बागीचे हैं जिनमें फल पैदा होते हैं। उनसे मेरी इतनी आय हो जाती है कि मेरा जीवन सुख-शांति से बीत रहा है। इसलिए मैं आपसे चिकित्सा के प्रति धन के रूप में कुछ नहीं ले सकता। हां, आपसे एक विनती है कि आप मेरी एक इच्छा पूरी करें।"

"क्या है इच्छा आपकी?" राजा ने आश्चर्य से पूछा।

"आप हमारे गांव पालकी में आये, और जब लौटें तो रथ पर लौटें। यही मेरी इच्छा है।" श्वेतांबर ने बड़े सहज होकर कहा।

इसके बाद श्वेतांबर ने राजा को एक पत्र देते हुए कहा, "प्रभु, मेरे व्यवहार में यदि कुछ अटपटा रहा हो और इससे आपको दु:ख पहुंचा हो तो उसके लिए मैं आपसे क्षमाप्रार्थी हूं। मैंने आपको रथ पर बैठकर जाने को क्यों कहा, इसका आपको राजधानी पहुंचने तक पता चल जायेगा। यदि ऐसा नहीं हुआ तो कृपया आप मेरा यह पत्र पढ़ लीजिएगा।"

राजा और सेनापति तथा राजा के परिवार के लोग रथ पर बैठकर राजधानी के लिए चल पड़े। तमाम रास्ता ऊबड़-खाबड़ था और वह कटना मुश्किल हो रहा था।

सेनापति को लगा कि शायद राजा को शारीरिक कष्ट पहुंचाना ही उस घमंडी वैद्य का मकसद था ।

सेनापति ने राजा से कहा, "देख लिया न, महाराज, कितना घमंडी है वह वैद्य! पहले आपको उसने अपने गांव में बुलवाने की गुस्ताखी की, और अब इस ऊबड़-खाबड़ रास्ते से आपको रथ पर धकेल दिया । वह पत्र मुझे दीजिए । देखूं, उसमें क्या लिखा है ।"

"इसकी ज़रूरत नहीं । मेरी समझ में आ गया है कि वैद्य ने उसमें क्या लिखा होगा ।" राजा ने कहा ।

अब तक राजा का रथ राजधानी में पहुंच गया था । राजा ने अपने मंत्री को बुलवाया और उसे आज्ञा दी, "अभी मधुरपुर मंडल के प्रतिनिधि को बुलावा भेजिए और जब वह आये तो उससे पूछिए कि हमने उसे रास्ते को ठीक करवाने के लिए जो राशि दी थी, उसका क्या हुआ । इसकी जानकारी मुझे जल्द से जल्द मिलनी चाहिए ।"

फिर राजा ने सेनापति से कहा, "वैद्य श्वेतांबर बहुत बुद्धिमान और कोमल-हृदय है । उस गांव के रास्ते के बारे में उसने हमें अपने ढंग से पहले ही बताने की कोशिश की थी, लेकिन हम समझ नहीं पाये । अब तुम वह पत्र पढ़ो । तुम्हें अपने आप सब कुछ पता चल जायेगा ।"

सेनापति ने वह पत्र पढ़ा । उसमें लिखा था, "प्रभु, आपको यात्रा में जो असुविधा हुई, उसके लिए मैं क्षमा-प्रार्थी हूं । मेरे यहां आनेवाले रोगी जिस प्रकार का कष्ट उठाते हैं, अब आपको उसका कुछ अनुभव हो गया होगा । कृपया, आप इस ओर ध्यान दें, और न्याय करें ।"

पत्र पढ़कर सेनापति चकित रह गया । तब राजा ने उससे कहा, "क्या अब आप कहेंगे कि वह वैद्य घमंडी है?"

कहना नहीं होगा कि इस घटना के एक महीने के अंदर-अंदर ही राजधानी से मधुरपुर तक एक अच्छी सड़क बन गयी और राहगीरों की सुविधा के लिए बीच-बीच में कुछ सरायें भी बना दी गयीं ।
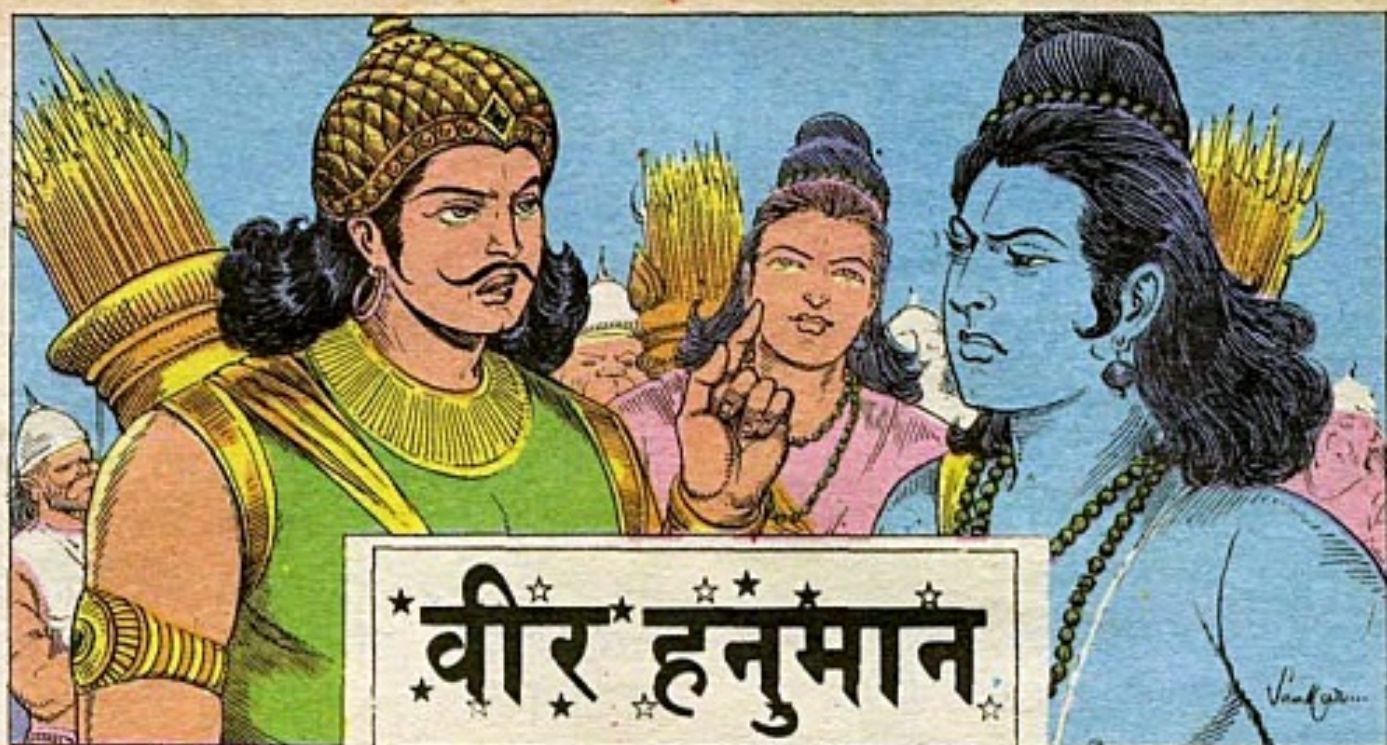
राम विक्षिप्त-से हो रहे थे। इसलिए उनकी समझ में नहीं आया कि विभीषण ने उनसे क्या कहा है। थोड़ी देर बाद वह कुछ संयत होकर बोले, "विभीषण, अभी-अभी तुमने कुछ कहा था। मैं उसे ठीक से समझ नहीं पाया। कृपा करके एक बार फिर अपनी बात स्पष्ट करो।"

इस पर विभीषण ने कहा, "राम, आप अकारण ही दुःखी हैं। अगर राक्षसों का वध करना और सीता को उनके चंगुल से छुड़ाना ही आपका ध्येय है, तो आप फिर से युद्ध के लिए प्रयास करें। सबसे पहले आप वानर सेना के साथ लक्ष्मण को निकुंभिला भेजें ताकि वह इंद्रजित से युद्ध करे और उसका वध कर दे। इंद्रजित इस समय यज्ञ करने के लिए निकुंभिला में है। यदि उसने अपना वह यज्ञ समाप्त कर लिया तो समझ लें उसके हाथों हम सब की मृत्यु निश्चित है। उसे ब्रह्मा से वरदान प्राप्त है। पर जो भी उसके यज्ञ में बाधा डालेगा, उसकी वह जान लेने की कोशिश करेगा। इंद्रजित की मृत्यु हो गयी तो रावण और उसके सहयोगी मृतसमान हो जायेंगे।"

विभीषण की बात अब राम की समझ में आ गयी थी। उन्होंने लक्ष्मण को आदेश दिया कि वह निकुंभिला जाये और वहां इंद्रजित का वध कर दे। साथ में उन्होंने वानर सेना और भल्लूक सेना को भेजा। लक्ष्मण के मार्गदर्शन के लिए विभीषण था। हनुमान भी उन के साथ चल दिया।

२९. इंद्रजित का वध

सेना में खलबली मची । यह देख इंद्रजित एकदम सतर्क हो गया । वह यज्ञ-स्थल से उठ खड़ा हुआ और अपने रथ पर बैठकर युद्ध के लिए तैयार हो गया ।

इधर विभीषण और लक्ष्मण काफी आगे बढ़ आये था । दूर से उन्हें वह महोद्यान दिखाई दे रहा था जहां इंद्रजित यज्ञ कर रहा था । वहां एक बड़ा-सा वृक्ष था जो यज्ञ करने से काला पड़ गया था और भयावह दिख रहा था । इंद्रजित वहीं भूतबलि देता था और फिर अदृश्य होकर युद्ध करता था ।

लक्ष्मण तो युद्ध के लिए पूरी तरह तैयार ही था । उधर इंद्रजित भी उनकी ओर तेज़ी से बढ़ता आ रहा था ।

"मैं तुम्हें युद्ध के लिए ललकार रहा हूं । तुम मेरे साथ युद्ध करो ।" इंद्रजित जैसे ही लक्ष्मण के निकट हुआ, लक्ष्मण ने उसे फटकार देते हुए कहा ।

इंद्रजित ने लक्ष्मण की फटकार सुनी और देखा कि उसके साथ विभीषण भी खड़ा है । इस पर वह गुस्से से तमतमा गया और बोला, "हे विभीषण । तुम कैसे राक्षस हो जो राक्षसों के प्रति वैमनस्य पाले हुए हो । यह तुम्हारा अपना स्थान है । तुम मेरे पिता के भ्राता भी हो । फिर भी तुम मेरे प्रति ऐसा भाव रखते हो । अब मैं समझ गया । तुम अधर्मी हो । तुम में कुल-मर्यादा का कोई लिहाज़ नहीं । तुम अपने ही बंधु-बाधवों को छोड़कर शत्रु की दासता में चले गये हो । इससे बढ़कर लज्जा की

युद्ध के लिए निकलते समय लक्ष्मण ने अपना विशेष कवच और धनुर्बाण धारण कर लिये थे । अभी वे निकुंभिला पहुंचे भी नहीं थे कि उन्हें दूर से राक्षस सेना का व्यूह दिखाई दिया । विभीषण ने लक्ष्मण को चेताते हुए उस व्यूह-रचना की ओर इशारा किया और उसे स्पष्ट किया कि इंद्रजित का यज्ञ समाप्त होने से पहले ही राक्षस सेना का अंत कर देना होगा । उसने यह भी कहा कि जैसे ही वह व्यूह-रचना भेद दी जायेगी, इंद्रजित एकदम सामने दिखाई देने लगेगा, और उसी समय उसका वध कर देना होगा ।

अब वानर सेना और भल्लूक सेना लक्ष्मण के नेतृत्व में राक्षस सेना पर टूट पड़ी थी । युद्ध ने भयानक रूप ले लिया था ।

बात और क्या हो सकती है । तुम्हारे इस आचरण पर तुम्हारे सगे तुम पर रोयेंगे और तुम्हारी भर्त्सना करेंगे । क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि अपनों के बीच गौरव से रहना और परायों के बीच गौरवहीन होकर रहने में क्या अंतर है? तुम मेरे अपने हो । फिर भी तुमने मेरे यज्ञ में विघ्न डालने का षड्यंत्र रचा । मेरा अहित तुम कैसे सोच पाये? ऐसी नीचता की मैं तुमसे कभी आशा नहीं करता था ।"

इंद्रजित के कटु वाक्य सुनकर विभीषण ने उत्तर दिया, "धिक्कार है तुम्हें, हे इंद्रजित । मेरे स्वभाव से क्या तुम अब तक भी परिचित नहीं हो पाये? तुम मुझे धर्म-अधर्म में भेद बता रहे हो? अधर्म की मेरे यहां कहां गुंजाइश है? अगर ऐसा होता तो मैं अपने बड़े भाई का त्याग न करता । तुम्हारे पिता में हर प्रकार का दुर्गुण है । शीघ्र ही उसके कारण समूची लंका और सभी राक्षसों का अंत हो जायेगा । तुम्हारा पिता अब बच नहीं सकता । तुम स्वयं भी कुछ ही क्षणों के मेहमान हो । इसलिए तुम जो भी कहना चाहते हो, तुरंत कह दो । तुम्हारी मृत्यु तुम्हारे निकट ही खड़ी है । इसलिए अब ऐसी बातें करने का कोई लाभ नहीं । मायावी सीता का वध करके तुमने राम और लक्ष्मण का अपमान किया है । तुम्हें जीने का कोई अधिकार नहीं । तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम लक्ष्मण से युद्ध करके मृत्यु का वरण करो और यमलोक में पहुंच कर सब के सेवक बनकर रहो ।"

इंद्रजित की दृष्टि लक्ष्मण पर टिकी हुई
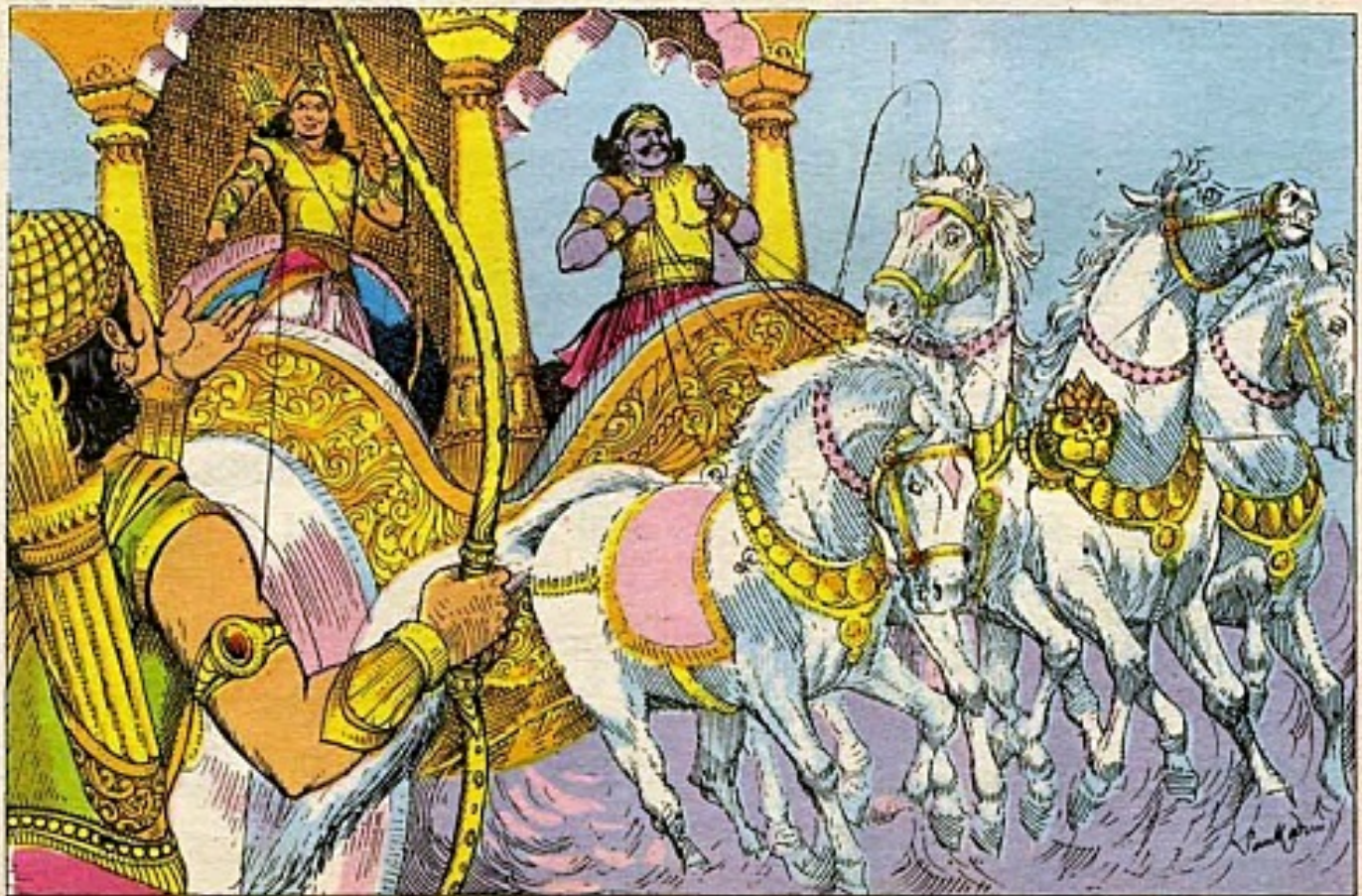
थी । उसे संबोधित करते हुए वह बोला, "उस रात तुमने युद्ध करके मेरे बाणों का स्वाद चख लिया था, लक्ष्मण! फिर भी तुम मेरे साथ युद्ध करने का साहस कैसे जुटा पाये? लगता है तुम्हारी स्मरण-शक्ति तुम्हारा साथ नहीं दे रही ।"

"तुम चोर की तरह छिपकर युद्ध करते हो । क्या तुम इसे बीरता कहते हो? अगर तुम में थोड़ा-सा भी आत्म-सम्मान है तो तुम सामने आकर युद्ध करो । केवल चातुर्यपूर्ण बातों से युद्ध को टालने की कोशिश मत करो ।" लक्ष्मण ने दो टूक बात कही ।

लक्ष्मण के मुंह से ये शब्द निकले ही थे कि इंद्रजित ने उस पर एकदम से बाण छोड़ दिये और उसे लहुलुहान कर दिया । इंद्रजित की इस दुष्टता पर लक्ष्मण बुरी तरह से कृद्ध हो उठा और उसने भी इंद्रजित पर तीक्ष्ण बाणों से प्रहार किया । दोनों ओर से बराबर की टक्कर थी ।

थोड़ी ही देर में विभीषण ताड़ गया कि इंद्रजित के चेहरे पर भय फैलता जा रहा है । उसने लक्ष्मण को सतर्क किया और कहा, "लगता है इंद्रजित को गहरा आघात हुआ है । यही समय है कि इसे खत्म कर दिया जाये ।"

विभीषण से इशारा पाकर लक्ष्मण ने इंद्रजित पर और तीक्ष्ण बाण चलाये । इंद्रजित मूर्च्छित हो गया । लेकिन तुरंत ही वह होश में आ गया और होश में आते ही उसे अपने पराक्रम की याद हो आयी । उसने अब लक्ष्मण और विभीषण दोनों पर एक-साथ बाण छोड़ दिये ।

इंद्रजित के इस प्रहार से लक्ष्मण रत्ती भर भी विचलित नहीं हुआ, बल्कि उसे फटकारते हुए बोला, "क्या इसी तरह तुम युद्ध करते हो? क्या ये ही तुम्हारे बाण हैं?" और इसके साथ ही लक्ष्मण ने इंद्रजित पर और मारक बाण छोड़े ।

लक्ष्मण का यह प्रहार बहुत कारगर सिद्ध हुआ । इससे इंद्रजित का कवच टुकड़े-टुकड़े हो गया और उसका शरीर बाणों से छलनी हो गया ।

अब इंद्रजित का क्रोध भी अपने चरम पर था । उसने भी इतनी तीव्रता से बाण

इंद्रजित का अंत नहीं कर सकते? अगर इसे भी यमलोक पहुंचा दें तो रावण बिलकुल पंगु हो जायेगा। मैं चाहूं तो स्वयं ही इसका काम तमाम कर सकता हूं, लेकिन यह मेरे सगे भाई का पुत्र है। मैं इसकी अपने हाथों हत्या नहीं कर सकता। इसलिए उचित यही होगा कि तुम सब मिलकर एक बार इसकी सेना का विनाश कर दो।"

विभीषण के शब्दों ने वानर वीरों में एक नया उत्साह भर दिया। वे सब सिंहनाद करते हुए राक्षस सेना पर टूट पड़े। विभीषण तथा उसके सलाहकार भी राक्षस सेना के साथ भिड़ गये।

इस बीच लक्ष्मण ने अपने बाण से इंद्रजित के सारथी का सर धड़ से अलग कर दिया था। अब इंद्रजित अपना सारथी स्वयं था। उसकी ऐसी दशा हुई देख मारक बाणों के साथ-साथ व्यंग्य बाणों की बौछार भी शुरू हो गयी। वास्तव में अब इंद्रजित का दर्प टूट चुका था। उसके चेहरे पर भीरुता स्पष्ट झलकने लगी थी। इस भीरुता को देखकर सभी वानर वीर खुशी से उछल रहे थे।

इतने में प्रमथी, शरभ, रभस और गंधमादन, चार वानर वीर एकसाथ इंद्रजित के रथ में जुते घोड़ों पर टूट पड़े और देखते ही देखते उन्होंने उन चारों घोड़ों का सफाया कर दिया।

इंद्रजित के लिए अब कोई चारा नहीं बचा था। उसे अपने रथ से नीचे आना पड़ा। वह अब धरती पर खड़ा होकर ही लक्ष्मण

छोड़े कि लक्ष्मण का कवच भी नष्ट हो गया। अब वे दोनों कवच-विहीन थे। फिर भी वे काफी देर तक युद्ध करते रहे। यह युद्ध खत्म होने को आ ही नहीं रहा था। स्पष्ट था कि यह तभी खत्म होता जब उन दोनों योद्धाओं में से एक का अंत हो जाता।

युद्ध की इस भयंकरता को देखते हुए विभीषण ने अब निर्णय लिया कि उसे भी अपने चारों सलाहकारों के साथ इस युद्ध में कूद पड़ना चाहिए। लेकिन युद्ध में कूदने से पहले उसने वानर सैनिकों से कहा, "हे वानर वीरो, रावण के पास इस इंद्रजित को छोड़कर और कोई योद्धा नहीं बचा है। अब तक तुम बड़े से बड़े राक्षस-योद्धा का अंत कर चुके हो। क्या तुम सब मिलकर इस

पर बाण छोड़ रहा था। उसकी सुरक्षा के लिए उसके चारों ओर राक्षसों ने फिर से व्यूह बना लिया था।

पर इंद्रजित को लगा कि वह नितांत असुरक्षित है। इसलिए उसने अपने सैनिकों से कहा, "तुम युद्ध करना जारी रखो। मैं किसी तरह नगर में प्रवेश करने का प्रयत्न करूंगा। वहां मुझे दूसरा रथ मिल ही जायेगा। मैं उसी पर चढ़कर वापस आऊंगा।"

इंद्रजित ने अपने सैनिकों की आड़ लेकर वैसा ही किया। लंका से अब वह एक दूसरे रथ पर बैठकर युद्धभूमि को लौट रहा था। उसे एक बार फिर रथ पर सवार हुआ देख लक्ष्मण और विभीषण आश्चर्य में पड़ गये।

इंद्रजित अपने बाणों से अब वानर सेना को भारी क्षति पहुंचा रहा था। लक्ष्मण ने एक बार फिर इंद्रजित पर जमकर प्रहार किया और उसके धनुष को तोड़ डाला। इसके बाद उसने इंद्रजित के रथ सारथी का सर भी धड़ से उड़ा दिया।

इस पर भी इंद्रजित बराबर युद्ध किये जा रहा था और उसने विभीषण को भी काफी घायल कर दिया था। घायल होने के कारण विभीषण का संयम समाप्त हो गया था। उसने अपनी गदा से इंद्रजित के रथ के घोड़ों पर वार किया और उन्हें खत्म कर दिया।

अब इंद्रजित और लक्ष्मण एक बार फिर आमने-सामने थे और दोनों ने ही दिव्य अस्त्रों का प्रयोग करना शुरू कर दिया था। अंत में लक्ष्मण ने जो ऐंद्रास्त्र छोड़ा उससे इंद्रजित का सर कटकर धरती पर आ गिरा।
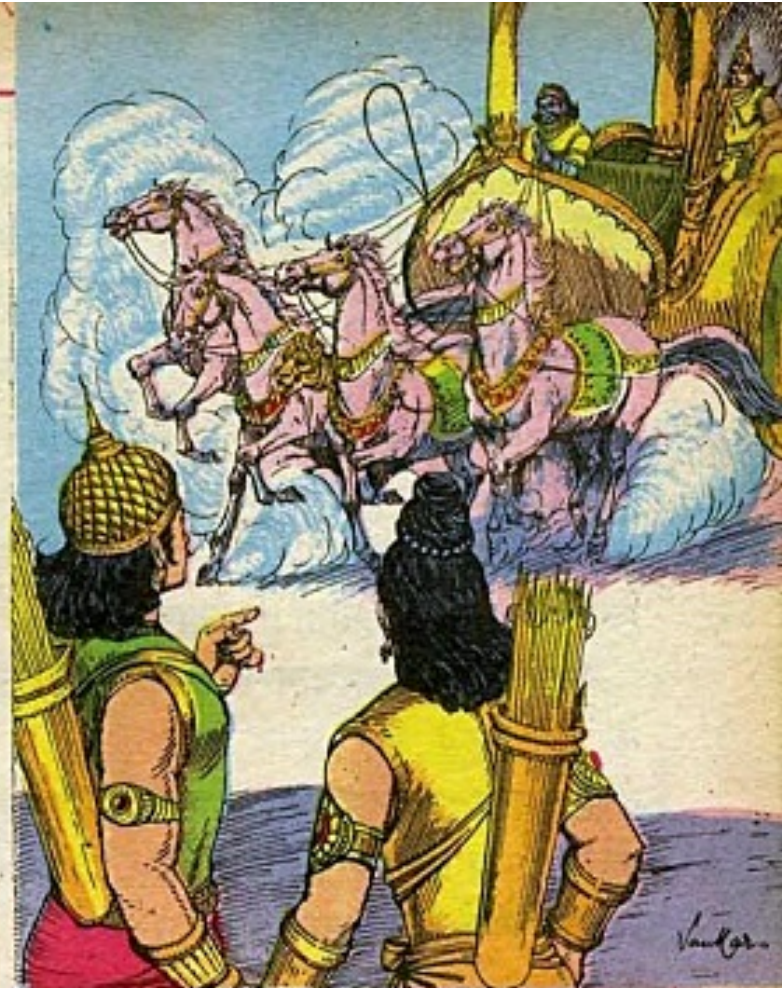
इंद्रजित के सर का कटकर धरती पर गिरना था कि विभीषण और वानर योद्धाओं की खुशी का ठिकाना न रहा। विजयोल्लास में वे कई तरह के स्वर निकाल रहे थे और साथ में सिंहनाद भी कर रहे थे। राक्षस सेना की तो अब बुरी हालत थी। वह गाजर-मूली की तरह कट रही थी। जो राक्षस अपने को किसी तरह बचा पाये, वे भयभीत होकर वहां से भाग खड़े हुए। इंद्रजित की मृत्यु से वे शोक-संतप्त भी थे।

इंद्रजित का वध हो जाने से वानर सेना में भारी संतोष आ गया। वानर योद्धा लक्ष्मण

की प्रशंसा करते हुए अघाते न थे । लक्ष्मण लौट कर राम के पास पहुंच गया था । राम ने उसे निकट पाते ही अपने आलिंगन में ले लिया और बोले, "इंद्रजित के न रहने से रावण का अब दायां हाथ कट चुका है । अब रावण को आसानी से खत्म किया जा सकता है ।" फिर राम ने सुषेण से कहा कि वह लक्ष्मण के घावों का उपचार करे ।

उधर युद्धभूमि से भागे राक्षस सीधे रावण के पास पहुंचे और अपने दु:ख को किसी तरह दबाते हुए बोले, "लक्ष्मण ने विभीषण की सहायता से निकुंभिला पहुंचकर इंद्रजित से युद्ध किया और उसका अंत कर दिया ।"

यह सूचना रावण के लिए गाज समान थी । इसे सुनते ही रावण मूर्च्छित होकर वहीं गिर पड़ा । जब वह होश में आया तो वह इंद्रजित का नाम ले-लेकर ज़ोर-ज़ोर से प्रलाप करने लगा । फिर उसके पुत्र-शोक ने क्रोध का रूप ले लिया और उसके मन में विचार उठा कि उसे इसी क्षण सीता का वध कर देना चाहिए । इस विचार के उसके मन में आते ही उसने पास खड़े राक्षसों से कहा, "मेरे बेटे इंद्रजित ने मायावी सीता का वध किया था । मैं असली सीता का वध करूंगा ।" वह तलवार लेकर अशोक वाटिका जाने के लिए तैयार हो गया ।

पर मंदोदरी और रावण के मंत्रियों को जैसे ही पता चला कि रावण किस इरादे से अशोक वाटिका जाने को तैयार है, उन्होंने तुरंत उसे रोका और बोले, "जो भी काम करना है, सोच-विचार कर, शांत मन से करो । सीता का वध करने से आपके हाथ क्या लगेगा? अब भी हम सब की भलाई इसी में है कि सीता को लौटा दिया जाये । आपको क्रोध दिखाना है तो आप राम पर दिखायें । सीता पर क्रोध दिखाने से कोई लाभ नहीं मिलेगा ।"

मंदोदरी और मंत्रियों की बात सुनकर रावण को याद आया कि उसका लक्ष्य राम का वध करना है, सीता का वध करना नहीं । इसलिए उसने आदेश दिया कि लंकायज्ञ की तैयारियां घोर रूप से शुरू की जायें ।

# चंदामामा की खबरें

## कृत्रिम वर्षा

गुजरात के कच्छ क्षेत्र में जुलाई के महीने में बड़े ज़ोरों की बारिश हुई । इसका कारण वहां के २७ स्थलों पर बादल-बुवाई संबंधी किया जाने वाला एक प्रयोग था । इस प्रयोग को "वर्षाकण परियोजना" नाम दिया गया । इसके तहत धधकते कोयले में सिल्वर आयोडाइड को हवा के ज़ोर से डालना था । इससे भाप बनी । और जब यह भाप बादलों तक पहुंची तो बारिश होने लगी । इस प्रयोग की सफलता किन्हीं आदर्श स्थितियों पर निर्भर करती थी । जैसे संबंधित भाग में काफी मात्रा में बादलों का बनना, तापमान का एक खास सीमा के भीतर रहना और विशिष्ट आर्द्रता का बने रहना । बादलों की इस बुवाई का असर लगभग चार दिन तक बने रहने का दावा किया गया है ।
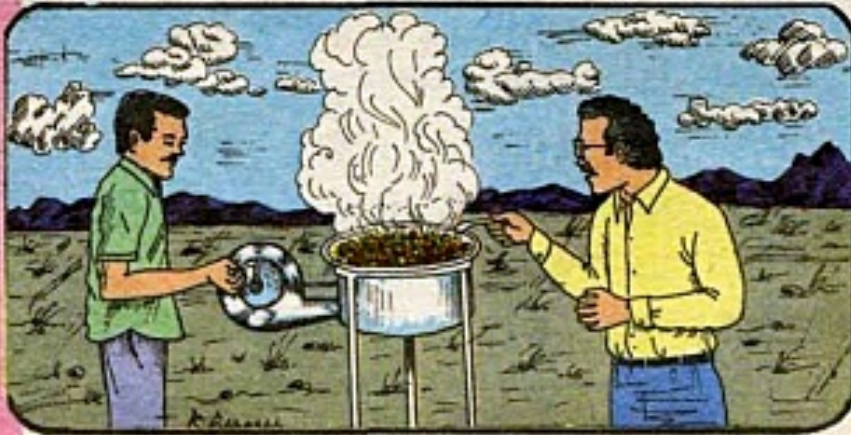
भक्तिभाव वाले कुछ लोगों ने इस प्रयोग में इंद्रदेव की पूजा करके ज़रूर अपना इंद्रधनुष भेजें । यह एक संभावना है जिससे एकदम इनकार नहीं किया जा सकता ।

## चैनल पार करने का रिकार्ड

हाल ही में एक विकलांग महिला जानकी ने एक और कीर्तिमान स्थापित किया है । वह महिला बंगलौर के एक बैंक में काम करती है । आम तौर पर वह पहियों वाली कुर्सी पर ही इधर-उधर आती-जाती है । २९ जुलाई को उसने उफनते इंग्लिश चैनल को पार किया । वह इंग्लैंड के शेक्सपीयर बीच से तैरकर फ्रांस के विसां तट तक पहुंची । यह दूरी ३७ किलोमीटर की है । उसने तैरने का प्रशिक्षण

बंगलौर में लेना शुरू किया । फिर वह मालपे समुद्रतट पर समुद्र में तैरने का अभ्यास करती रही । वहां वह एक ही सप्ताह में सात किलोमीटर की दूरी पार करके सेंट मेरी टापू पर पहुंचने में सफल हुई । मालपे में वह तीन सप्ताह तक प्रशिक्षण लेती रही । फिर वह शेक्सपीयर बीच पर ५ सप्ताह तक अपने को वहां की जलवायु के अनुकूल बनाती रही । जिस समय वह चैनल से बाहर आयी, उसके मुंह से एकाएक निकला, "मेरा सपना पूरा हुआ!" अब वह गिन्नेस बुक में अपना नाम देखने की राह देख रही है ।

## बढ़ना रुका

ग्यारह वर्ष की उम्र में उस बालक का कद चार फुट था । इसके बाद वह लंबा ही लंबा होने लगा । उसका नाम के. गट्टैया है, और वह आंध्रप्रदेश के करीमनगर जिले का रहने वाला है । अब उसकी उम्र १८ वर्ष है और वह ७ फुट ४ इंच लंबा है । इस समय वह भारत का सबसे लंबा व्यक्ति है । अब भी वह और लंबा हो सकता था । लेकिन डाक्टरों ने हाल ही में अनूठी शल्य-क्रिया उसकी की जिस में १२ डाक्टर लगे हुए थे, और उनकी निगरानी दो और डाक्टर कर रहे थे । इस शल्य-क्रिया में लगभग पांच घंटे लगे, जिसमें उसके पीयूष (पिच्यूटरी-ट्यूमर) को निकाला गया । इससे अब उसका बढ़ना रुका ।

# चमड़ी का जूता

चित्रदुर्ग गांव में सदाशिव और महादेव नाम के दो व्यापारी रहते थे । वे दोनों पड़ोसी थे । सदाशिव साफ दिल का आदमी था । महादेव को हमेशा धोखाधड़ी की ही सूझती । अगर किसी में कुछ अच्छा देखता तो डाह से कुढ़-कुढ़कर परेशान हो जाता ।

सदाशिव की नेकी को जानकर लोग उससे बहुत प्यार करते थे और उसे इज़्ज़त देते थे । इससे महादेव हमेशा जलता रहता ।

इधर सदाशिव की बेटी अब सयानी हो गयी थी और उसके लिए एक अच्छा रिश्ता भी तय हो चुका था । शादी का खर्च पूरा करने के लिए सदाशिव को थोड़ी मुश्किल पड़ रही थी । इसलिए उसने महादेव से कुछ रकम उधार मांगी ।

महादेव तो ऐसे ही किसी मौके की तलाश में था । वह झट से बोला, "मेरे पास इतनी बड़ी रकम कहां से आयेगी? तुम जानते ही हो, हाल ही में मैंने अपनी छोटी बेटी की शादी की है ।"

महादेव जानता था कि सदाशिव किसी के सामने अपना हाथ नहीं फैलायेगा । "महादेव, तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं किसी और से कर्ज़ नहीं मांग सकता । तुम मेरा यह काम कर दो, बाद में अगर तुम चाहोगे तो मैं तुम्हारे लिए अपनी चमड़ी के जूते भी बनवाने को तैयार रहूंगा ।" सदाशिव ने गिड़गिड़ाते हुए कहा ।

महादेव थोड़ी देर कुछ सोचता रहा । फिर बोला, "ठीक है, कुछ दिन पहले मेरे समधी के मामा ने मुझे कुछ राशि दी थी । इस रकम में से मैं तुम्हें तुम्हारी ज़रूरत की रकम दे सकता हूं ।"

फिर वह भीतर गया और कुछ रकम के साथ बाहर चला आया और वह उसने

सुवर्णा चक्रवर्ती

सदाशिव के हवाले दी ।

सदाशिव की बेटी का विवाह ठीक-ठाक हो गया । चार महीने बाद उसने वह रकम महादेव को ब्याज समेत लौटाते हुए कहा, "तुमने मेरी जो वक्त पर मदद की, मैं उसे कभी भूलूंगा नहीं, महादेव ।"

सदाशिव की बात सुनकर महादेव ने चौंकने का नाटक किया और उसकी तरफ देखते हुए कहा, "यह सब तो ठीक है, मगर तुम्हारी वह जूते वाली बात का क्या हुआ?"

"जूते वाली बात? वह क्या है?" अब चौंकने की बारी सदाशिव की थी ।

"ओह! कलियुग में यही सब कुछ तो होता है । लोग अपने दिये वचन को भी याद नहीं रखते । बस, अपना काम निकल गया, फिर तू कौन और मैं कौन! क्या तुम ने यह नहीं कहा था कि तुम मुझे अपनी चमड़ी के जूते बनवा कर दोगे?" महादेव ने पूछा ।

सदाशिव पर जैसे कि वज्रपात हुआ । वह सन्न रह गया । फिर किसी तरह धीरे से बोला, "क्या तुम मज़ाक तो नहीं कर रहे? कुछ बातें ऐसे ही कह दी जाती हैं । क्या तुम यह नहीं जानते?"

महादेव अब गुस्से में आ गया था । गरजते हुए बोला, "मज़ाक? तुम इसे मज़ाक कहोगे? बात तो आखिर बात ही होती है ।"

महादेव को इस तरह से चीख-चीख कर बोलते सुनकर वहां काफी भीड़ जुट गयी । कुछ लोगों ने महादेव को समझाने की कोशिश भी की, लेकिन महादेव पर तो
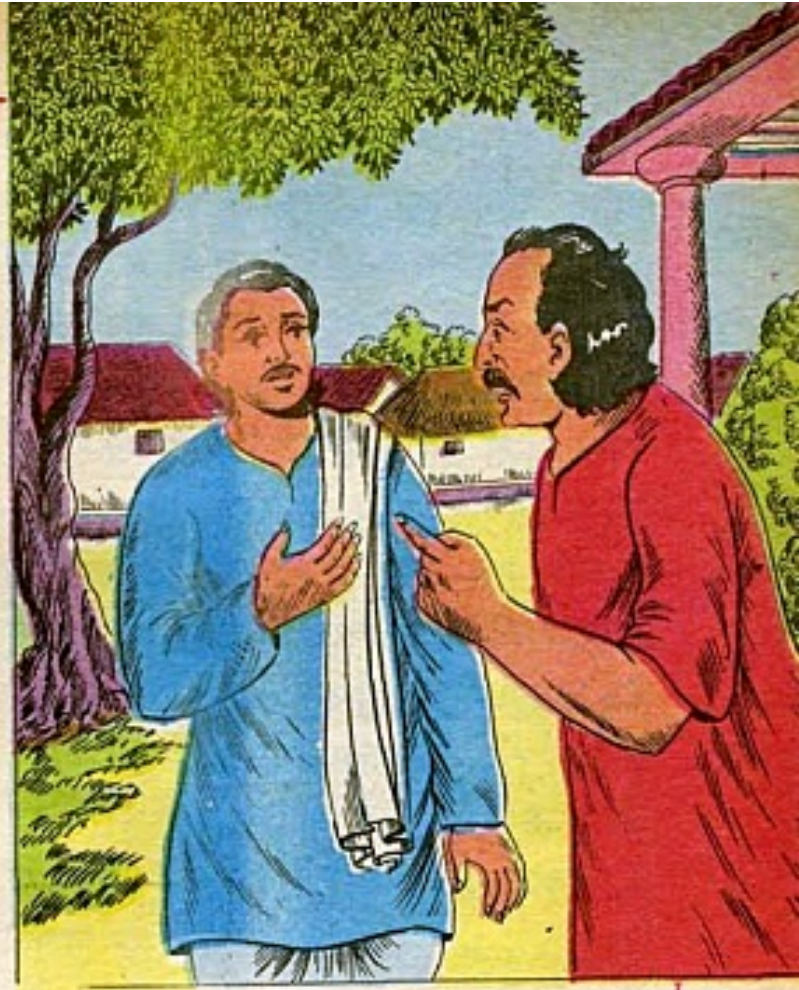
शैतान सवार था । वह भला क्यों मानता । वह टस से मस न हुआ ।

होते-होते यह तकाज़ा गांव के मुखिया के पास पहुंचा । मुखिया ने फैसला महादेव के हक में सुनाया । दरअसल, उसने महादेव से घूस ले रखी थी ।

फैसला सुनकर सदाशिव का सर चकरा गया । आखिर, उसकी बेटी और दामाद ने उसे यह सलाह दी कि वह राजा के पास जाये और वहां फरियाद करे ।

सदाशिव की फरियाद पर राजा ने महादेव को बुलवाया और उससे सारी बात सुनने के बाद बोला कि फैसला एक सप्ताह बाद सुनाया जायेगा । फिर उसने दोनों को वापस भेज दिया ।

दो दिन बाद महादेव को किसी काम से शहर जाना पड़ा। रास्ते में जंगल पड़ता था। जिस समय वह जंगल में से निकल रहा था, चोरों ने उसे घेर लिया और उससे सब कुछ छीन लिया। इत्तफ़ाक से उसी समय राजा उस जंगल में शिकार खेल रहा था। उसने वह सब देख लिया था।

चोर जब उसे लूटकर जाने को हुए तो राजा उसके निकट पहुंचा। राजा को पहचान कर उसने उसके सामने बड़ी नम्रता से हाथ जोड़े और उसका अभिवादन करते हुए बोला, "प्रभु, मुझ पर कृपा कीजिए। मैं पूरी तरह बरबाद हो गया। मुझे मेरा माल इनसे वापस दिलवाइए। मैं आपका यह ऋण हर हालत में चुकाऊंगा, चाहे मुझे मरकर आपके बेटे के रूप में ही क्यों न पैदा होना पड़े।"

महादेव की बात सुनकर राजा ने फौरन अपनी तलवार म्यान में से खींची और चोरों पर लपक पड़ा। चोर सारा सामान वहीं छोड़कर वहां से भाग खड़े हुए।

महादेव ने संतोष की सांस ली और झुकझुककर राजा को प्रणाम करता रहा। उधर राजा अपनी कृतज्ञता जताकर वहां से चला गया।

आखिर, फरियाद सुनने का दिन भी आ ही गया। सदाशिव और महादेव, दोनों, दरबार में मौजूद थे। राजा ने एक बार फिर उनसे सारी बात सुनी और इसके साथ ही अपना फैसला सुना दिया, "बात तो आखिर बात ही है। व्यक्ति को इस पर कायम रहना चाहिए। इसलिए सदाशिव को चाहिए कि वह अपनी चमड़ी निकलवाकर

महादेव के लिए जूते बनवा दे ।"

राजा का फैसला सुनना था कि सदाशिव मारे डर के थर-थर कांपने लगा । दरबारी भी यह फैसला सुनक सन्न रह गये । लेकिन महादेव इस फैसले से खुशी से उछल पड़ा ।

तभी राजा ने एकाएक महादेव की ओर देखा और कहा, "अच्छा, महादेव । तुमने मुझ से जो वायदा किया था, उसका क्या होगा?"

"कैसा वायदा, अन्नदाता?" महादेव ने अबोध बनते हुए कहा ।

"अरे, दो दिन पहले की ही तो बात है! वह भी तुम भूल गये! तुमने मुझे वचन दिया था कि अगर मैं तुम्हें चोरों से बचा दूं तो तुम मरकर मेरे बेटे के रूप में पैदा होगे । इसलिए अब तुम मर जाओ ताकि तुम अपना वचन निभा सको ।" राजा ने कहा ।

यह सुनते ही महादेव को लगा जैसे कि उस पर एक बहुत बड़ा पहाड़ गिर पड़ा हैं । वह सर से पांव तक कांप गया और बोला, "मैंने तो यह बात सिर्फ बात के लिए कही थी, अन्नदाता!"

इस पर राजा बोला, "क्या कहते हो! आखिर, बात तो बात ही होती है । इसी बात को लेकर तो तुम सदाशिव से तकाज़ा कर रहे थे, और फिर मेरे पास पहुंचे थे । तुमने मेरा फैसला सुन लिया न? अब मैं तुम्हें लेकर अपना फैसला कैसे बदल सकता हूं । अगर मैं यह फैसला भी तुम्हारे ही पक्ष में दूं तो लोग मुझे अन्यायी कहने लगेंगे । इसलिए इस फैसले में कोई रियायत नहीं हो सकती । तुम्हें मरकर मेरे बेटे के रूप

में पैदा होना ही पड़ेगा, और वह भी इसी वक्त । इसलिए तुम जैसे ही सदाशिव की चमड़ी का जूता पहनोगे, उसके दूसरे ही पल तुम्हें मुझे दिया हुआ वचन पूरा करना होगा । यह मेरा आदेश है । चाहो तो बाद में मेरे बेटे के रूप में पैदा होकर सदाशिव की चमड़ी के जूते बराबर पहने रहना ।"

अब दरबारियों की समझ में आया कि राजा ने पहले वाला फैसला क्यों सुनाया था । वे सब ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगे ।

महादेव मारे शर्म के ज़मीन में गड़ा जा रहा था । इसके साथ ही उसकी समझ में यह भी आ गया था कि राजा ने उसे पाठ पढ़ाने के लिए ही वह चोरों वाला नाटक किया था और उसका रक्षक बनकर वहां उपस्थित हुआ था ।

वह उसी क्षण राजा के पांवों पर गिर पड़ा और उससे क्षमा-याचना करते हुए कहने लगा, "मुझ से बहुत बड़ी गलती हुई, अन्नदाता । ऐसे गलती मुझ से फिर कभी नहीं होगी । आप इसे मेरी पहली गलती मानकर मुझे क्षमा कर दीजिए ।"

लेकिन इससे पहले तुम्हें सदाशिव से माफी मांगनी होगी ।" राजा ने कहा, "मैं तुम्हें तब माफ करूंगा ।"

महादेव ने तुरंत सदाशिव के हाथ थाम लिये और उससे दया की भीख मांगने लगा । सदाशिव के मन में तो कोई गांठ नहीं थी । इसलिए उसने उसे तुरंत माफ कर दिया ।

पर राजा ने वहां उपस्थित गांव के उस घूसख़ोर मुखिया को भी नहीं बख़्शा । उसने उसे चेतावनी तो दी ही, छोटा सा दंड भी दिया और आइंदा के लिए ठीक न्याय करने की हिदायत दी ।

राजा के फैसले में जो चतुराई थी, उसकी हर किसी ने प्रशंसा की । लेकिन सबसे बड़ी बात यह थी कि इस फैसले ने महादेव को एकदम बदल दिया था । अब वह सही मायनों में सदाशिव का मित्र बन गया था । इतना ही नहीं, इस घटना ने कई और लोगों को भी प्रभावित किया और उनमें बदलाव पैदा कर दिया ।

# गाय की अच्छाई

एक ज़मींदार को दुधारू गऊएं रखने का बड़ा शौक था। आस-पास के इलाके में जब भी कभी पशु मेला लगता, वह अपने सहायकों के साथ ज़रूर वहां पहुंचता और अपनी पसंद की गऊएं खरीदकर लाता।

एक बार पशु मेले में उसे एक भी गऊ ढंग की नज़र नहीं आयी। इतने में एक किसान अपनी एक दुधारू गऊ वहां बेचने के लिए लाया। गऊ के साथ उसक बछड़ा भी था। ज़मींदार को वह गऊ देखने में अच्छी लगी। इसलिए उसने किसान को रोक कर पूछा, "क्यों भाई, क्या तुम यह गाय बेचोगे?"

"बेचने के लिए ही तो मैं इसे इतनी दूर से हाकंता हुआ ला रहा हूं न, हुजूर!" किसान ने भोलेपन से उत्तर दिया।

"क्या तुम्हरी गाय अच्छी है?" ज़मींदार ने पूछा।

"हुजूर, यह मेरी गाय है। मुझे बुरी क्यों होती?" किसान ने पूछा।

"चलो, ठीक है। पर एक बात और बताओ। तुम्हारी यह गाय सींग तो नहीं मारती?" ज़मींदार ने पूछा।

"परेशान करेंगे तो यह सींग क्यों नहीं मारेगी! आदमी तो हाथ भी उठा बैठेगा। पशु सींग ही मार सकता है।" किसान ने कहा।

"अच्छा, एक बात और, तुम्हारी यह गाय हर रोज़ कितना दूध देती है?" ज़मींदार ने पूछा।

"यह बताना तो मुश्किल है, श्रीमान्। हां, एक बात मैं दावे के साथ कह सकता हूं-मेरी गाय रत्तीभर दूध भी अपने पास छिपा कर नहीं रखती। जितना उसके पास होता है, दे देती है।" किसान के कहा।

यह उत्तर पाकर ज़मींदार मुस्करा उठा। उसने अब किसान से और कोई प्रश्न नहीं किया, बल्कि किसान ने उस गाय के जो दाम मांगे थे, उससे कुछ ज़्यादा चुकाकर उसे खरीद लिया।

—लक्ष्मी विद्या

# इब्राहीम का पुरस्कार

ईरान में इब्राहीम और इस्माइल नाम के दो लकड़हारे रहते थे । वे रोज़ जंगल में जाते, वहां लकड़ियां काटते और फिर उनका गट्ठर बनाकर उन्हें शहर में बेचने के लिए ले आते । पर लकड़ियां बेचने से उन्हें जो पैसा मिलता, वह उनके लिए पर्याप्त नहीं होता था, क्योंकि उनके परिवार काफी बड़े थे । हर वक्त वे अमीर ब्नने के सपने लेते रहते ।

इब्राहीम में दोनों प्रकार की भक्ति-भावना थी, अपने परवरदिगार के प्रति भी और अपने देश के बादशाह के प्रति भी । इसलिए वह यह कामना करने लगा कि अगर वह अमीर बने तो ऐसा बने जो अल्लाह और बादशाह दोनों को कबूल हो ।

इसके विपरीत, इस्माइल में ऐसी कोई भावना नहीं थी । उसके मताबिक न अल्लाह उसकी गरीबी दूर कर सकता था और न ही वहां का बादशाह । वह केवल अमीर बनना चाहता था, अल्लाह या बादशाह को चाहे वह कबूल हो या न हो ।

एक दिन दोनों लकड़हारे जंगल में अलग-अलग दिशाओं में लकड़ियां काट रहे थे । इस्माइल के मन में अचानक एक ख्याल आंया, और वह झट से इब्राहीम के पास पहुंचा, और उससे बोला, "इब्राहीम भाई, लोगों को कहते सुना है कि जंगलों में कभी-कभी छिपे हुए खज़ाने भी मिल जाते हैं । अगर हमें ऐसा कोई खज़ाना मिल जाता तो क्या बात थी ।"

"अगर ऐसा खज़ाना मिल भी जाता तो किस काम का था । ऐसे खज़ाने समूची जनता की संपत्ति समझे जाते हैं । इसलिए उन्हें बादशाह को सौंप देना ही हमारा फर्ज़ होगा ।" इब्राहीम ने कहा ।

"तुम फर्ज़ की बात करते हो? ऐसा फर्ज़

ईरानी लोक कथा

जाये भाड़ में ।" यह कहकर इस्माइल वहां से चला गया ।

दूसरे दिन जब वे रोज़ की तरह जंगल में लकड़ियां काटने गये तो इब्राहीम को वहां एक सूखे पेड़ का तना दिखा । जब वह उसे काटने लगा तो उसके भीतर से सोने का एक बर्तन उछलकर बाहर आ गया । वह बर्तन दीनारों से भरा हुआ था ।

इब्राहीम दौड़ता हुआ इस्माइल के पास पहुंचा । जब उसे सारी बात का पता चला तो वह चकित हुआ, फिर उसने पूछा, "अच्छा, अब यह बताओ कि तुम्हारा इरादा क्या है?"

"इरादा? इरादा क्या हो सकता है, सिवाय इसके कि यह सारा माल बादशाह को सौंप दिया जाये । हां, अगर बादशाह अपनी खुशी से हमें कुछ दें तो हम ज़रूर ले लेंगे ।" इब्राहीम ने उत्तर दिया ।

"अरे नालायक । ऐसा करोगे तो आइंदा तुम्हारी ज़िंदगी में कभी खुशी नहीं आयेगी ।" इस्माइल बोला ।

इब्राहीम चुप हो गया और इब्राहीम को उम्मीद थी कि इस्माइल उस सोने को देखने केलिए उसके साथ ज़रूर आयेगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ । इब्राहीम अकेला ही चुपचाप वहां से लौट आया और लकड़ियां बांधते समय उसने वह सोने का बर्तन भी उनके बीच रख लिया और घर लौट आया । लकड़ियां उसने वहीं छोड़ीं और सोने का बर्तन लेकर वह राजधानी में पहुंचा । वह

बर्तन उसने बादशाह को सौंप दिया और उसे बताया कि वह उसे कैसे मिला है । बादशाह ने अपने दरबार में इब्राहीम की खूब तारीफ करते हुए उस बर्तन को अपने खज़ाने में ले लिया, और उसे एक सौ दीनार इनाम में देकर रुखसत किया ।

इब्राहीम इनाम लेकर बादशाह के यहां से लौट आया और उस रकम से उसने एक छोटा सा कारोबार शुरू किया ।

इस घटना के दो दिन बाद ही इब्राहीम को खबर मिली कि नकली सोना बेचने के अपराध में इस्माइल राजधानी में पकड़ा गया है और उसे बंदी बना लिया गया है ।

इब्राहीम उसे देखने तुरंत राजधानी में पहुंचा । इस्माइल कारावास में था और

बादशाह के सामने उसकी अभी तक सुनवाई नहीं हुई थी ।

इब्राहीम सीधे बादशाह से ही जा मिला । उसने बादशाह से प्रार्थना की कि इस्माइल को छोड़ दिया जाये और उसकी जगह उससे जुर्माना इत्यादि वसूल कर लिया जाये, क्योंकि इस्माइल उसका दोस्त है । इब्राहीम की बात सुनकर बादशाह ने दरबारियों को संबोधित करते हुए कहा, "जो अल्लाह को मानते हैं और अपने बादशाह के प्रति वफादार रहते हैं, और साथ ही धर्मानुसार जीवन-यापन करते हैं, उनका समय पूरी सुख-शांति से बीतता है । इसके विपरीत जो चालाकी का सहारा लेंगे, उन्हें तकलीफें उठानी पड़ेंगी । मिसाल के तौर पर मैं आप लोगों को एक कहानी सुनाता हूं । दो लकड़हारे थे । एक में अल्लाह के प्रति निष्ठा थी और बादशाह के प्रति वफादारी । दूसरा लकड़हारा इसके बिलकुल उलटा था । एक बार बादशाह जंगल में शिकार खेलने गया । उसे उन दोनों के बीच चल रही बातचीत सुनाई दी । जहां वे लकड़ियां काट रहेंगे, वहां बादशाह ने दो नकली सोने के बर्तन गड़वा दिये । यानी दोनों को सोने के बर्तन मिले थे । पहले लकड़हारे ने धर्म का पालन किया और अपना बर्तन बादशाह को सौंप दिया । उसे पुरस्कार स्वरूप एक सौ दीनार मिले । दूसरे लकड़हारे ने सारा सोना खुद ही हड़प जाना चाहा । इसलिए वह राजधानी में उसे बेचते हुए पकड़ा गया । वह पहला लकड़हारा इब्राहीम है और दूसरा इस्माइल ।" फिर बादशाह ने उन्हें दरबारियों को दिखाया ।

इब्राहीम की प्रार्थना पर बादशाह ने इस्माइल को छोड़ दिया, क्योंकि इब्राहीम ने इस्माइल के लिए ज़मानत दी थी कि वह आइंदा ऐसी और हरकत नहीं करेगा और उसमें बदलाव भी आयेगा ।

इब्राहीम की बात को इस्माइल ने सच बना दिया । वह वाकई बहुत ईमानदार हो गया । इब्राहीम ने उसे अपने कारोबार में भी हिस्सेदार बना लिया ।

## बंदरों का प्रसाधन

बंदरों को भी इंसान की तरह अपने शरीर को खुजाने की आदत है। यदि स्वयं खुजाने से उन्हें संतोष नहीं मिलता तो वे दूसरे बंदरों से मदद लेते हैं। तुमने अक्सर उन्हें पत्तों से एक दूसरे का शरीर पोंछते देखा होगा। कई बार ऐसा भी होता है कि एक बंदर कहीं से दातुन तोड़कर लाता है और उससे दूसरे बंदर के दांत रगड़कर साफ करने लगता है।

## तीरंदाज़ मछली

तीरंदाज़ (आर्चर) मछली की लंबाई मुश्किल से २० सें. मी. होती है। चांदी से इस के बदन के आर-पार कुछ काली धारियां होती हैं। अपने भोजन की तलाश यह बड़े अजीब ढंग से करती है। किसी लटकते पत्ते के किनारे पर किसी कीड़े को देख ले तो यह फौरन उस पर पानी का फव्वारा छोड़ती है। इससे वह कीड़ा पानी में गिर जाता है और इसका शिकार बन जाता है। पत्ते पर बैठे कीड़े को कोई आशंका नहीं होती, क्योंकि पानी में से मछली सावधानी बरतती है।

## मक्खियों में दानव

दानव मक्खी के लार्वा को "निंफ" कहते हैं। ये निंफ बहुत ही भुक्खड़ होते हैं। नन्ही मछलियां, कीड़े-मकोड़े, घोंघे, या मेंढक सब खा जाते हैं। अगर ये भी न मिलें, तो दूसरे निंफों का शिकार कर लेते हैं। पानी के अंदर निंफ एक ज़बरदस्त आतंक माना जाता है। पानी से बाहर आने पर इनकी झिल्ली हटने लगती है और ये बहुत ही सुंदर होते हैं। अब ये उड़ते-उड़ते शिकार की खोज करती हैं।
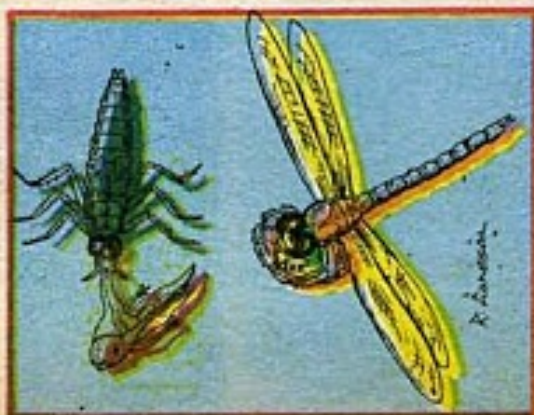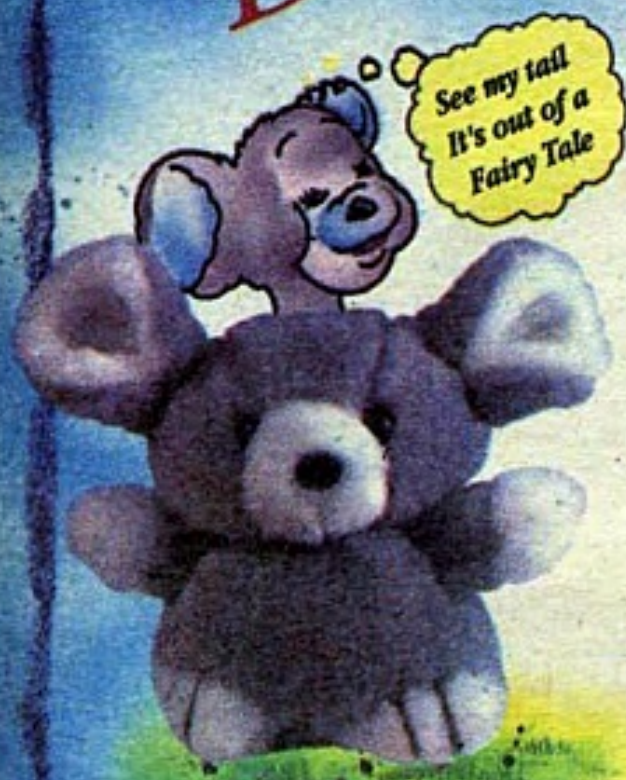
Don't you owe the
See my tall It's out of a Fairy Tale
Nice 'n' funny I'm a Bunny
Your Bear Hugs are warmer than mine
Foxy is my name But I'm oh-so tame

little one a cuddles?
Give the Li'l Panda a Handa
No carrots to eat But I'm a treat
The CHANDAMAMA Collection of Soft Toys
CHANDAMAMA TOYTRONIX
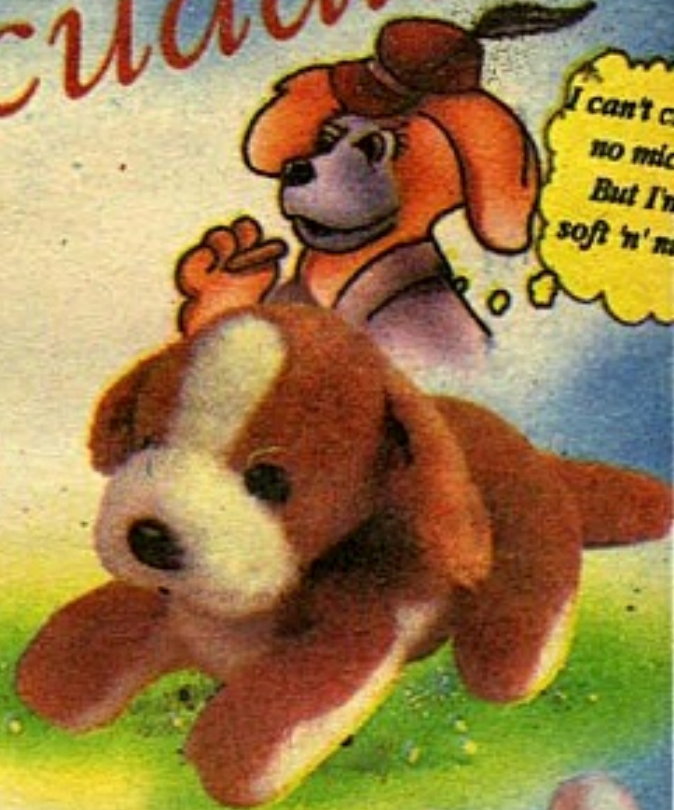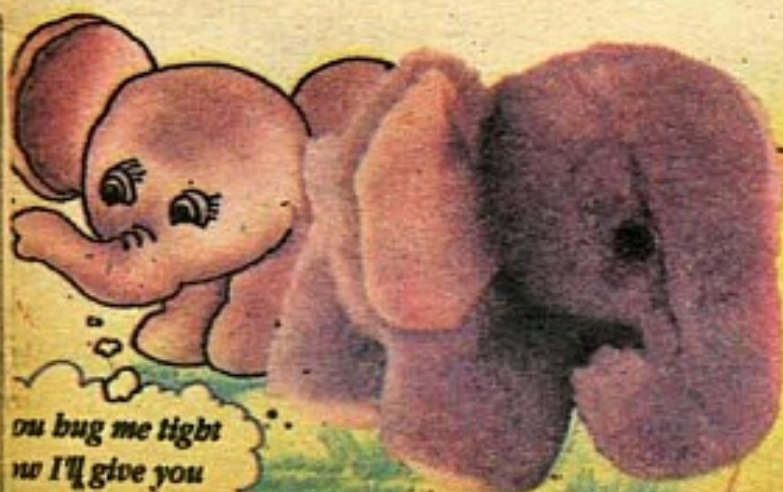
# फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

**पुरस्कृत परिचयोक्तियां जनवरी, १९९३ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।**

M. Natarajan

M. Natarajan

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । ★ १० नवम्बर'९२ तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए । ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००-/ का पुरस्कार दिया जाएगा । ★ दोनों परिचयोक्तियां केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें : **चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६**

## सितम्बर १९९२ की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **भैया अओ चलें हम साथ!**

दूसरा फोटो : **क्या मैं करूं तुम से बात!!**

प्रेषिका : निधि संदल, १, धामावाला मोहल्ला, देहरादून (उ.प्र.)

पुरस्कार की राशि रु. १००/- इस महीने के अंत में भेजी जाएगी ।


## चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी,

मद्रास-६०० ०२६



Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.



The stories, articles and designs contained herein are exclusive property of the Publishers and copying or adapting

अपने प्यारे चहेते के लिए जो हो दूर सुदूर
है न यहाँ अनोखा उपहार जो होगा प्यार भरपूर

# चन्दामामा

**प्यारी-प्यारी सी चंदामामा दीजिए उसे उसकी अपनी पसंद की भाषा में—**

आसामी, बंगला, अंग्रेज़ी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड
मलयालम, मराठी, उड़िया, संस्कृत, तमिल या तेलुगु
—और घर से अलग कहीं दूर रहे उसे लूटने दीजिए घर की मौज-मस्ती

चन्दे की दरें (वार्षिक)

**आस्ट्रेलिया, जापान, मलेशिया और श्रीलंका के लिए**

समुद्री जहाज़ से रु. 105.00 वायु सेवा से रु. **252.00**

**फ्रान्स, सिंगापुर, यू.के., यू.एस.ए.,**
**पश्चिम जर्मनी और दूसरे देशों के लिए**

समुद्री जहाज़ से रु. 111.00 वायु सेवा से रु. **252.00**

अपने चन्दे की रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी ऑर्डर द्वारा
'चन्दामामा पब्लिकेशन्स' के नाम से निम्न पते पर भेजिए:

सर्क्युलेशन मैनेजर, चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६.